

Fourth Series, Vol.I, No. 2

Friday, 17 March, 1967  
Phalguna 26, 1888 (Saka)

# LOK SABHA DEBATES

(First Session)



(Vol. I contains Nos. 1 to 10)

LOK SABHA SECRETARIAT  
NEW DELHI

Price : Rs. 2. 00

## CONTENTS

No 2—Friday, March 17, 1967 Pūṣalguna 26, 1888 (Saka)

	COLUMNS
Members Sworn . . . . .	21—22
Election of Speaker . . . . .	22—54
Felicitations to Speaker . . . . .	54—74
Shrimati Indira Gandhi . . . . .	54—56
Shri M.R. Masani . . . . .	56—74
Shri A.B. Vajpayee . . . . .	56—57
Shri K. Anbazhagan . . . . .	57—60
Shri S.A. Dange . . . . .	60
Shri Ram Sevak Yadav . . . . .	60—61
Shri A.K. Gopalan . . . . .	61—62
Shri Surendranath Dwivedy . . . . .	62—63
Shri N.C. Chatterjee . . . . .	63—64
Shri Ebrahim Sulaiman Sait . . . . .	64—65
Shri Prakash Vir Shastri . . . . .	65—67
Shri Frank Anthony . . . . .	67—69
Dr. Govind Das . . . . .	69—71
Shri Tenneti Viswanatham . . . . .	71—74

## LOK SABHA DEBATES

21

### LOK SABHA

—

Friday, March 17, 1967/Phalguna 26,  
1888 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the  
Clock.

—

[THE SPEAKER pro tem (Dr. Govind  
Das) in the Chair]

#### MEMBERS SWORN

अध्यक्ष महोदय : सचिव, उन सदस्यों के  
नाम पढ़ाएँ, जिन्होंने अभी तक शपथ नहीं  
ली है अथवा प्रतिज्ञान नहीं किया है।

Shri N. Sreekantan Nair (Quilon):  
It may be translated in English also.  
The practice is that when the Chair-  
makes an observation, it should be  
translated in English also.

Mr. Speaker: I think Members are  
aware that there is an arrangement  
here for simultaneous translation  
from Hindi to English and from Eng-  
lish to Hindi. Does the hon. Mem-  
ber want that I should speak in Eng-  
lish also?

Shri N. Sreekantan Nair: The Chair  
is expected to maintain the practice  
and the decorum as it used to do in  
the past.

Mr. Speaker: Does he want me to  
speak in English too?

Shri N. Sreekantan Nair: Yes.

Mr. Speaker: Secretary may call out  
the names of Members who have not  
yet made and subscribed the oath or  
affirmation.

22

Shri Kotha Raghuramaiah (Guntur)

Shri Lakhan Lal Kapoor (Kishan-  
ganj).

Shri Virendrakumar Jivanlal Shah  
(Junagadh).

Shri P. K. Vasudevan Nair (Peer-  
made)

Shri V. Sambasivam (Nagapatti-  
nam).

Shri Srinibas Mishra (Cuttack).

Shri Bhola Nath (Alwar).

Shri Ashoke Kumar Sen (Calcutta  
North-West).

Shri M. L. Sondhi (New Delhi)

Shri Frank Anthony (Nominated—  
Anglo-Indians).

—

11.09 hrs.

#### ELECTION OF SPEAKER

अध्यक्ष महोदय : डा० राम सुभग सिंह  
यह अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें, जो उनके  
नाम से है।

Dr. Ram Subhag Singh may now  
move the motion which stands in his  
name.

श्री नथु सिन्हा (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय,  
मेरा व्यवस्था का प्रश्न है (Interruptions).  
चौथी लोक सभा का प्रारम्भ व्यवस्था के  
प्रश्न के बिना नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय मेरी राय में संसदीय  
प्रणाली के सिद्धान्तों को मद्देनजर रखते हुए  
डा० राम सुभग सिंह यह प्रस्ताव सदन

[श्री मधु लिमबे]

के सामने नहीं रख सकते हैं और उन को नहीं रखना चाहिये। आप के मार्फत मैं कुछ परम्पराओं की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। मैं ने पिछले तीन लोक सभा की कार्यवाहियों को देखा और पहली लोक सभा से दो नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश हो गए थे। एक माबलकर जी का नाम था और दूसरा श्री शंकर राव मोरे का था। उस वक़्त भी मैं ने देखा कि माबलकर जी का प्रस्ताव प्रधान मंत्री ने रखा था और उस को तार्द सत्यनारायण मिंगा ने को थी। (प्रधान) मेरे पास किताब है। तो अब मैं आप का ध्यान मेज़ पार्लियामेन्ट प्रैक्टिस की ओर दिलाना चाहता हूँ। पृष्ठ 28। आप देख लीजिये। किताब मगबा लीजिए। अध्यक्ष महोदय, मैं पढ़ रहा हूँ मेज़ पार्लियामेन्ट प्रैक्टिस 17वीं एडिशन पे

"Election of a Speaker by the Commons: It is customary for the Mover and Seconder to be unofficial members. In 1789, Mr Pitt was desirous of proposing Mr Addington himself. But Mr. Hatsell on being consulted said 'I think that the choice of the Speaker should not be on the motion of the Minister. Indeed, an invidious use might be made of it to represent you as the friend of the Minister rather than the choice of the House.' Mr Pitt acknowledged the force of this objection"

तो इसलिए मेरा निवेदन है कि समस्त कार्य मंत्री इस प्रस्ताव को न रखें। हमें सभा संसदीय प्रणालियों की बात की जाती है और हमारे ऊपर बराबर आरोप लगाया जाता है कि मैं और मेरे साथी संसदीय प्रणालियों को खत्म कर रहे हैं, उन का करारा जवाब मतदाताओं ने तो दिया है, उस के बारे में तो मैं कुछ कहना नहीं चाहता हूँ। (अध्यक्ष) अब आप को जरा सुनने की धावन डालनी चाहिए। अब वह राकसी बहुमत आप का नहीं रह गया

है। देश में बहुत बुरा लोगों का है। यह केवल एक दुर्घटना है कि यहाँ पर आप लोगों का बहुमत हो गया।

तो अध्यक्ष महोदय, संसदीय प्रणालियों को कौन भंग कर रहा है? इस लोक सभा के सत्र के पहले मैं ने प्रधान मंत्री को एक बिट्टी लिखी थी और अध्यक्ष महोदय के पद की जितनी कदर मैं करता हूँ, जितनी इज्जत मैं करना चाहता हूँ चायद ही कांग्रेस पार्टी का कोई सदस्य चाहता है, इसलिए अध्यक्ष महोदय, मैंने प्रधान मंत्री से प्रार्थना की थी कि अध्यक्ष पद के लिए आप किस व्यक्ति का नाम देती हैं उस से मुझका मतलब नहीं है। आप बात चीत करना चाहती है विरोधी दलों से तो करिए लेकिन बात चीत का नाटक मत करिए। मुझे खेद है कि बातचीत का नाटक किया गया कि सर्वमम्मति में अध्यक्ष बनाया जायगा और फिर बाद में क्या हुआ? कांग्रेस पार्टी के सदस्य विभिन्न गुटों में जो कणमकह है उसी के प्रभाव में आकर। (अध्यक्ष)

The Minister of Works, Housing and Supply (Shri Jaganath Rao): This is not a point of order (Interruptions)

Shri S M Banerjee (Kanpur): Let them hold their souls in patience (Interruptions).

Shri Krishna Kumar Chatterjee (Howrah) On a point of order Can he deliver a speech on this occasion?

अध्यक्ष महोदय बात होइए।

श्री मधु लिमबे प्वाइट आफ आर्डर चल रहा है तो उस पर प्वाइट आफ आर्डर कैसे हो सकता है?

अध्यक्ष महोदय बात होइए।

श्री मधु लिमबे अब यह चीज नहीं चलने वाली है। आप जाति से



सुन लिया करो और हमारी जो दलीलें हैं अगर आप लोगों में बुद्धि और हिम्मत है ही उन का जवाब दीजिये । हल्ला करने से काम नहीं बनता है... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय . शांत रहिए । आप लोगों को बोलना होगा तो मैं आप को इजाजत दूंगा बोलने की । आपको बोलने दीजिए ।

श्री जगु लियवे . अध्यक्ष महोदय, मैं ने पांच मुराव प्रधान मंत्री के सामने रखे और मैं ने यह कहा था कि, ऐसे व्यक्ति को अध्यक्ष बनाइए, चाहे वह जिस किसी दल का हो, जो अध्यक्ष बनने पर अपने दल से इस्तीफा दे और कहे कि मैं इस मदन के हर एक सदस्य के अधिकारों की रक्षा करूंगा, मैं किसी भी दल का आदमी नहीं हूँ मैं पूरे सदन का हूँ । और दूसरी बात मैंने यह कही थी कि अगर बहुदोवार चुनाव लड़ना चाहेंगे पांचवां चुनाव तो हम सभी विरोधी दल के लोग उन के खिलाफ कोई उम्मीदवार न खड़ा करेंगे अगर वह निर्दलीय उम्मीदवार के नाते लड़ेंगे तो । तीसरी बात मैं ने यह कही थी कि अध्यक्ष के पद का आप नीलाम मत कीजिए । भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अनन्त श्याम आयरगर को आप ने राज्यपाल बनाया तो क्या वजह है कि हमारे सरदार हुकम सिंह साहब ने क्या अपराध किया है, उन को भी बनाते लेकिन अच्छी बात यह होनी कि आप अनन्त श्याम आयरगर को भी हटाइए और आइन्दा से यह कानून बनाइए कि चूंकि अध्यक्ष का पद सब से ऊंचा पद है । वह जनता के जो प्रतिनिधि हैं उन का भी सभापति है । इसलिए जो एक दफा अध्यक्ष बनता है उस को अपने दल के मांतवृत्त रखने के लिए वह रिश्तत न दी जाय उस को उपराष्ट्रपति बनाने की या राज्यपाल बनाने की । चौथी बात यह कि वर्तमान बिबादों में हिस्सा न लें । पांचवां बात मैं ने यह कही थी कि उस को आप पेंशन दीजिए ताकि

वह इज्जन में रहे और किसी का गुनाह न बने । . . (व्यवधान) . . एक इज्जत में ज्यादा नहीं, वह तो हमारा मिद्वान्त है ही ।

तो इस तरह के मुझाब प्रधान मंत्री के सामने मैं ने दिए । लेकिन क्या नतीजा हुआ ? विरोधी दलों के साथ मलाह मशवरा करने का नाटक किया गया और अन्दरूनी जगहों की वजह से प्रधान मंत्री ने मंजीव रेडडी का नाम एनाउंस कर दिया लेकिन कम से कम इतना तो लिहाज किया जाता कि मंत्री के द्वारा नाम नहीं रखा जाता । अभी जो मैं ने मेज पार्लियामेंटी प्रैक्टिस को पड़ा उस का क्या अर्थ है ? यही न कि मंजीव रेडडी साहब राम मुभग सिंह के मित्र है । . . (व्यवधान) तो सदन को करने दीजिए । इसलिए मेहरबानी कर के राम मुभग सिंह और कृष्ण चन्द्र पत जो मंत्री बन चुके हैं वह यह प्रस्ताव हरगिज न रखें । क्या कांग्रेस पार्टी में कोई गैर सरकारी सदस्य नहीं मिल रहा है मंजीव रेडडी का नाम रखने के लिए ? क्या अपने दल में वह इतने अग्रिय है कि मंत्रिमंडल के सदस्यों के अलावा उन का नाम रखने के लिए और उन का समर्थन करने के लिए और कोई व्यक्ति नहीं मिल रहा है ? यह मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । इसलिए मैं आप के भार्पन कहना चाहता हूँ कि वह रख नहीं सकते हैं, रखना नहीं चाहिए अगर प्रणालियों के बारे में, जिसकी कि बकवास बहुत करने हैं यह मंत्री लोग अगर थोड़ा भी लिहाज उस का करना चाहते हैं तो आप अपने नाम पर जो प्रस्ताव है उसे वापस लीजिए ।

संतोष काव्य सभा संचार मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : श्रीमन, जो बातें कही गई हैं, यदि हम क्लस आफ प्रोसीजर ऐंड कान्टेन्ट आफ बिजनेस इन लोक सभा

[डा० राम सुभग सिंह]

के अर्धर 3 पर ध्यान दें और नियम 7 (2) को देखें तो उस के अनुसार बात समझ में आ सकती है, इन्होंने जो बकवास की बात कही है, उससे साबित हो जायगा कि हमारी ओर से बकवास होती है या किमकी ओर से होती है।

"At any time before noon on the day preceding the date so fixed, any member may give notice in writing, addressed to the Secretary, of a motion that another member be chosen as the Speaker of the House."

मुझे पता नहीं है कि हमारे मित्र मधु निमये जी इतनी इन सारी बातों से सम्पर्क रखते हैं, इस को निगाह में रखते हुए मिला और दूसरी बातों की ओर चले गए और इसलिए मैं आप के आदेश के अनुसार यह प्रस्ताव पेश कर रहा हूँ।

श्री मधु निमये : आप क्या कह रहे हैं ? उनको अभी निर्णय देना है। आप अध्यक्ष जी न ले सग गए ?

अध्यक्ष महोदय : मुझसे इस बात की व्यवस्था चाही गई है कि डाक्टर राम सुभग सिंह इस प्रकार का प्रस्ताव पेश रख सकते हैं या नहीं ? जो रूल नम्बर 7 है उस में स्पष्ट कहा गया है कि कोई भी सदस्य इस तरह का प्रस्ताव रख सकता है। किसी के मिनिस्टर होने का यह अर्थ नहीं है कि सदस्यता खो गई। यदि वह सदस्य है तो चाहे वह मिनिस्टर हों या वह मिनिस्टर न हों वह अपना इस प्रकार का प्रस्ताव उपस्थित कर सकते हैं। यह मेरी व्यवस्था है।

श्री मधु निमये : अध्यक्ष महोदय, एक बात है कि सरदार हुकम सिंह साहब का वह निर्णय है कि सदस्यों में मंत्रियों का चुनाव नहीं है। यह उन्होंने कहा है

यहाँ पर। वो तीन बार वह मतलब हम ने उठाया था और हुकम सिंह साहब ने कहा था कि सदस्यों में मंत्रियों का चुनाव नहीं है। मेरा नहीं है वह निर्णय।

अध्यक्ष महोदय : मैं ने इस संबंध में अपनी स्पष्ट व्यवस्था दे दी है कि नियम 7 के अनुसार राम सुभग सिंह जी इस प्रकार का प्रस्ताव आप के सामने उपस्थित कर सकते हैं।

डा० राम सुभग सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि श्री नीलम संजीव रेड्डी को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय।

I move

"That Shri N Sanjiva Reddy, a Member of this House, be chosen as the Speaker of this House"

बिना मन्त्रालय में राज्य मंत्री (श्री कुल्लब पन्त) : श्रीमन् मैं इस प्रस्ताव का अनुदान करता हूँ।

I second the motion

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि श्री नीलम संजीव रेड्डी को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय।

Motion moved:

"That Shri N Sanjiva Reddy, a Member of this House, be chosen as the Speaker of this House".

Shri N. Dandekar (Jamnagar): Sir, I move:

"That Shri Tenneti Viswanathan, a Member of this House, be chosen as the Speaker of this House."

Shri Surendranath Dwivedy (Kandrapara): Sir, I second the motion.

**अध्यक्ष महोदय :** प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि श्री तेन्नेटि विश्वनाथन् को जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय ।

अब श्री विश्वनाथन् के सम्बन्ध में श्रीर भी कई सदस्यों के प्रस्ताव हैं, चूंकि यह प्रस्ताव बहा पर रख दिये गये हैं । इस लिये अब शेष प्रस्तावों को यहां पर रखने की आवश्यकता नहीं है ।

**श्री नयु तिमये :** नियम के अनुसार बलिये, सब के प्रस्ताव सामने आ जायेंगे ।

**अध्यक्ष महोदय :** सब को रखू अन्ती बात है ।

**Shri S. A. Dange (Bombay, Central South):** Sir, I move:

"That Shri Tenneti Viswanathan, a Member of this House, be chosen as the Speaker of this House."

**Shri Indulal Yajnik (Ahmedabad):** Sir, I second the motion.

**अध्यक्ष महोदय :** प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि श्री तेन्नेटि विश्वनाथन् को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय ।

**Shri P. Ramamoorthy (Sivakashi):** Sir, I move:

"That Shri Tenneti Viswanathan, a Member of this House, be chosen as the Speaker of this House."

**Shri Tridib Kumar Chaudhuri (Bengal):** Sir, I second the motion.

**अध्यक्ष महोदय :** प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि श्री तेन्नेटि विश्वनाथन् को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय ।

**श्री नयु तिमये :** मैं प्रस्ताव करता हूं कि श्री तेन्नेटि विश्वनाथन् को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय ।

**Shri A. K. Gopalan (Kasargod):** I second the motion.

**सभापति महोदय :** प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि श्री विश्वनाथन् को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय ।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलराम पुर):** महोदय, मैं प्रस्ताव पेश करता हूं कि श्री तेन्नेटि विश्वनाथन् को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय ।

**श्री बलराज बबोळ (दक्षिणी दिल्ली):** मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

**अध्यक्ष महोदय :** प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि श्री विश्वनाथन् को जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाय । श्री भानु प्रकाश सिंह । उपस्थित नहीं हैं, इसलिए उन का प्रस्ताव उपस्थित नहीं हुआ ।

**Shri E. Umanath (Pudukkottai):** Perhaps he is kept in the Congress' detention camp.

**Shri K. Ananda Nambiar (Tiruchirappalli):** He is missing, Sir.

**अध्यक्ष महोदय :** अब आपके सामने दो नाम हैं एक श्री एन० संजीव रेड्डी का और दूसरा श्री तेन्नेटि विश्वनाथन् का । पहला प्रस्ताव श्री रेड्डी का सामने है, इस लिये मैं आपके सामने उस प्रस्ताव को उपस्थित करता हूं, जो उन के पक्ष में हों...

**श्री नयु तिमये :** अध्यक्ष महोदय, मतदान से पहले बेरी दूसरी व्यवस्था सम्बन्धी बात सुनिये ।

[श्री मधुलियसे]

अध्यक्ष महोदय, हम बजे के पहले मैंने दो प्रस्तावों की सूचना (पूर्व सूचना) आपके कार्यालय को दी है। मेरा प्रस्ताव नियम सं० 388 और 184 के मान्य है, जो कि इस प्रकार है—

"Any member may, with the consent of the Speaker, move that any rule may be suspended in its application to a particular motion before the House and if the motion is carried the rule in question shall be suspended for the time being"

नियम संख्या 184 इस तरह है।

"Save in so far as otherwise provided in the Constitution or in these rules, no discussion of a matter of general public interest shall take place except on a motion made with the consent of the Speaker."

मेरा प्रस्ताव है कि ये निम्न नियम स्थगित किये जाय, ये अध्यक्ष के चुनाव के सम्बन्ध में हैं, मैं चाहता हूँ कि नियम सं० 7 के उप-नियम 3 और 4 को स्थगित किया जाय। ये उप-नियम इस प्रकार हैं—

"(3) A member in whose name a motion stands on the list of business may, when called, move the motion or withdraw the motion, and shall confine himself to a mere statement to that effect"

(4) The motions which have been moved and duly seconded shall be put one by one in the order in which they have been moved, and decided, if necessary, by division

मैंने दो प्रस्तावों का नोटिस दिया है। अगर पहला नामन्जूर हो जायगा तो दूसरे का मसाल नहीं आयेगा, परन्तु यदि पहला प्रस्ताव सदन मन्जूर करता है तो दूसरा प्रस्ताव सामने आयेगा। ये दोनों प्रस्ताव इस प्रकार हैं—

"यह सभा निश्चय करती है कि लोक-सभा के नये अध्यक्ष के निर्वाचन सम्बन्धी प्रस्तावों पर नियम सं० 7 (4) को निलम्बित किया जाय।"

यानी यह जो डिबीजन के द्वारा मतदान करने वाले हैं, इस सभा की नियम को स्थगित रखा जाय। यह पास होने पर मेरा नियम सं० 184 के मान्य दूसरा प्रस्ताव आयेगा, जो इस प्रकार है—

"यह सभा निश्चय करती है कि लोक-सभा के अध्यक्ष का चुनाव गुप्त मतदान के द्वारा किया जाय।"

मैंने यह प्रस्ताव रखा है, इस पर अब बहस होने दीजिये। नियम निलम्बित करने सम्बन्धी प्रस्ताव पेश करने का अधिकार केवल सदस्यों को ही नहीं मिलना चाहिये। हम को भी प्रस्ताव रखने की इजाजत दीजिये। पिछली बार पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी के सम्बन्ध में श्री मल्ल नागरायण सिंह को यह अधिकार मिला था, फिर इस बार हम को क्यों नहीं मिल सकता।

डा० राम मनोहर लोहिया (कलकत्ता) : अध्यक्ष महोदय, फैसला देने के पहले आप और लोगो को भी सुन लीजिये। मुझे भी इजाजत दीजिये, मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ। सब से पहले मुझे आपका ध्यान इस ओर खींचना है

मैं हंसने की कोशिश कर रहा हूँ लेकिन वह कोशिश ज्यादा देर नहीं चल पायेगी। यह खुद एक व्यवस्था का प्रश्न है तो व्यवस्था के प्रश्न पर व्यवस्था कैसे हो सकती है। (व्यवधान)

श्री राम सेवक दास (बारांसी) : अध्यक्ष महोदय, यह उधर के लोग काश्दे, कानून तो जानते नहीं हैं ब्यर्थ में इस तरह से जोर कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य ब्राम्हि रॉय। मैं ने डा० राम मनोहर लोहिया

को बुसाया है इसलिए उन्हें बोलने दिया जाय ।  
अध्याय माननीय सदस्य सान्त रहें ।

डा० राम बनीहर लोहिया अध्यक्ष महोदय, भारत के मविधान में राष्ट्रपति जी और इस लोकसभा के अध्यक्ष महोदय को विशेष स्थान दिया गया है । उन के चुनने के बारे में और उन को निकालने के बारे में दोनों के लिए एक विशेष नियम बनाया गया है । अब जैसे लोकसभा के अध्यक्ष का साधारण तौर से नहीं हटाया जा सकता, केवल एक वाट के आधिक्य से अध्यक्ष को नहीं हटाया जा सकता । उस में विशेष प्रणाली है । मुझे इस समय उस विशेष प्रणाली की ठीक ठीक याद नहीं आ रही है, दो तिहाई हो या दो तिहाई से कम हो, ऐसा कुछ नियम है । उस व्यवस्था में लोकसभा का अध्यक्ष एक विशेष अधिकार का स्थान रखता है और इसलिए उस का चुनाव ऐसे ही तरीके से होना चाहिए कि जिस से भारत की जनता इस लोकसभा और सब को तसल्ली हो और लोग समझें कि उन्होंने अपने अन्त करण और आत्मा की आवाज के अनुसार वोट दिया है । अन्त करण और आत्मा के अनुसार वोट देना खुले ढंग से कभी सम्भव हो नहीं सकता है । बड़े बड़े जो अमरीका और यूरोप के जनतन्त्र हैं वहां पर भी अगर खुला वोट छोड़ दिया जाता है तो कई तरह के प्रलोभन, कई तरह के भ्रष्टाचार, दबाव और चाप इत्यादि चीजें आ जाया करनी है । भारत में जहां जनतन्त्र की अभी शुरुआत हुई है जहां प्रलोभन, चाप और दबाव को राज्य करने का एक निश्चित और जरूरी अंग समझा जाता है वहां पर अध्यक्ष का चुनाव कभी भी खुले वोट में नहीं होना चाहिए क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे तो यहां न जाने कितने सदस्य अपने अन्त करण और आत्मा को दबा करके वोट डालेंगे खाली अपने दिल की आज्ञा के अनुसार (अध्यक्षान्त)

कुछ माननीय सदस्य . नो, नो ।

डा० राम बनीहर लोहिया मैं तरीकत बयान कर रहा हू इसलिए मेरा आप में निवेदन है कि उन सदस्यों को आप इस का मौका दीजिये कि वे गुप्त मतदान करके जो उन में अन्दर की आवाज है उस के अनुसार वह वोट दे और जो अध्यक्ष चुना जाय उस का मचमुच इस लोकसभा का बहुमत प्राप्त हो तभी जा कर के यहां का काम अच्छी तरह में चल सकेगा ।

अध्यक्ष महोदय स्वतन्त्रता में पूर्व और उस के बाद में जिस प्रकार अध्यक्ष के चुनाव होत रहे हैं उन्हें मैं देखना रहा हूँ । मदा प्रत्यक्ष मतदान हुआ है, गुप्त मतदान नहीं हुआ । ऐसी हालत में मैं श्री मधु लिये के प्रस्ताव को यहां पर उपस्थित करने की अनुमति नहीं देना ।

श्री मधु लिये इसीनिंग तो नियम को स्थगित करने की मांग की गई है ।

Shri S. M. Banerjee: Sir, may I invite your kind attention to rule 388 which reads thus

"Any member may, with the consent of the Speaker, move that any rule may be suspended in its application to a particular motion before the House and if the motion is carried the rule in question shall be suspended for the time being"

His first motion was that the particular rule may be suspended under rule 388, for which he has already given notice at 10 o'clock in the morning and which is admissible under the rules

अध्यक्ष महोदय माननीय सदस्य वही बात दुहरा रहे हैं जिसके विषय में मैं अभी कह चुका हूँ । इस सबन्ध में नियम में स्पष्ट लिखा हुआ है

"Any member may, with the consent of the Speaker "

[अध्यक्ष महोदय]

बहु स्पष्ट कहा गया है इसलिए मैं श्री मधु लिमये के प्रस्ताव को प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं दे रहा हूँ।

**Shri Surendranath Dwivedy:** Sir, whatever might be your ruling, the motion was something different. The motion was for suspension of the rule. You have not put that to the vote of the House. The motion does not say whether the voting should be open or secret. Whatever might be the precedent, it is advisable to have secret voting at this stage. But the present motion is for suspension of the particular rule and you have to put it to the vote of the House.

**अध्यक्ष महोदय :** जहाँ तक नियम के सस्पेंशन का मामला है वहाँ तक स्पष्ट कहा गया है रूल 388 में यह दिया हुआ है।

"Any member may, with the consent of the Speaker, move that any rule may be suspended in its application to a particular motion before the House and if the motion is carried the rule in question shall be suspended for the time being."

इस में स्पष्ट कहा गया है कि रूल के सस्पेंशन के सम्बन्ध में मेरी अनुज्ञा की आवश्यकता है। इसलिए मैं ने यह कह दिया कि यह वह जो कहा गया है—ऐनी मैम्बर मे विद दी कंसेंट आफ दी स्पीकर—तो मैं इस प्रस्ताव को यहाँ पर लाने के लिए अनुमति नहीं देता।

**श्री मधु लिमये :** क्यों नहीं दे रहे हैं ? यह अच्छा आप प्रारम्भ कर रहे हैं कि मंत्री जी जब चाहेंगे तब नियम स्थगित करवाये और यदि कोई वरिष्ठ सरकारी अथवा बिरोधी सदस्य कहेगा तो नहीं। क्या चौबी लोकसभा इसी आधार पर चलने वाली है। मैं आप से यह जानना चाहता हूँ ?

**Shri Randhir Singh (Bachak):** Sir, contempt of the House is being committed by the hon. Member. (अव्यवधान)

**अध्यक्ष महोदय :** मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह नियम के अनुसार कर रहा हूँ। जैसा मैं ने अभी कहा श्री मधु लिमये को प्रस्ताव उपस्थित करने की, जो कि सस्पेंशन आफ रूल के सम्बन्ध में है, मैं उसकी अनुमति नहीं दे रहा हूँ और बिना मेरी अनुमति के इस प्रकार का कोई प्रस्ताव यहाँ पर उपस्थित नहीं किया जा सकता।

**श्री सिधू पूजन शास्त्री (विक्रमगंज) :** क्यों नहीं दे रहे हैं ? आपसे प्रस्ताव बताया गया और वह प्रस्ताव पेश हुआ है। अब उस पर आपको मतदान लेना है यह बात दूसरी है कि वह मंजूर होता है कि नहीं। लेकिन आपने उसकी इजाजत दी है पेश करने के लिए तभी वह पेश हुआ है।

**अध्यक्ष महोदय :** मैं ने बिल्कुल इजाजत नहीं दी है पेश करने की। मैं ने सिर्फ़ उनसे यह कहा कि वह अपनी बात कह सकते हैं रूल 184 के मुताबिक। लेकिन मैं ने यह बिल्कुल साफ़ कह दिया कि मैं उनको उस प्रस्ताव को उपस्थित करने की अनुमति नहीं दे रहा हूँ और बिना मेरी अनुमति के वह प्रस्ताव उपस्थित नहीं किया जा सकता।

**श्री मधु लिमये :** ए दिन के लिए आप अध्यक्ष बने हैं फिर भी मनमानी कर रहे हैं।

**अध्यक्ष महोदय :** मैं ने आपसे कहा कि मैं कोई व्यवस्था नहीं दे रहा हूँ। मैं कोई क्लिग नहीं दे रहा हूँ बल्कि जो अधिकार मुझे है कि मैं उस प्रस्ताव को पेश करने की अनुमति दूँ या नहीं उस अधिकार का उपयोग कर मैं आपसे यह कह रहा हूँ कि मैं उस प्रस्ताव को पेश करने की अनुमति नहीं दे रहा। (अव्यवधान)

मैं अब पहला प्रस्ताव सभा के मतदान के लिए रखता हूँ। प्रश्न यह है :—

"कि श्री एम० संजीव रेड्डी को, जो इस सभा के सदस्य हैं, प्रश्न

सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

जो पक्ष में हों वे "हाँ" कहेंगे। जो विपक्ष हो  
वे "ना" कहेंगे। (अध्यक्षान)

**Shri Surendranath Dwivedy:** Sir, before you put it to the vote of the House I wish to make an appeal to you. We have heard your ruling. It is all right, it has been done on a previous occasion and you have gone by precedent. But there is no harm if we create a new precedent. The Speaker occupies a position, as you will realise, where he is the custodian of the House. Now a party-man is sought to be made the Speaker. If open voting is done, it will be known to all persons who have voted against the particular candidate and when he becomes the Speaker he may—I hope he will not—be prejudiced against those particular Members. So it is very much necessary to have the healthy convention to give the Members an opportunity to cast their votes in secret. I do not think there will be any harm if we do that. Therefore, I would appeal to you, and I would also request the Congress Party, to accept this suggestion and let us have secret voting on this occasion.

**Shri A. K. Gopalan:** This is a very bad beginning. I would request you not to begin like this. They have got the majority and they can reject any motion. We do not mind it. But, let them not behave like this. It has to be put to the vote. Otherwise, this will be a very bad beginning. On the very first day we should not begin like this. So, I would request you to see that the motion is put to the vote. If the motion is rejected by a majority of the members we will agree to that rejection. But if the motion is not even put to the vote, it is not a very good beginning for this Parliament.

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी :** (बलराम-  
पूर) : अध्यक्ष महोदय, विधियों के अनुसार  
आपको इस बात का अधिकार प्राप्त है कि

आप श्री मधु लिमये को नियमों में संशोधन करने सम्बन्धी प्रस्ताव पेश करने की इजाजत दें अथवा नहीं। यह अधिकार आपको प्राप्त है, और इस अधिकार का आपने उपयोग भी किया है। इसके लिये आपने पुरानी परम्पराओं का हवाला दिया है। मैं भी चाहता हूँ कि इस सदन में परम्परायें चले, स्वस्थ परम्परायें डाली जायें। लेकिन मैं बड़े कष्ट के साथ आपसे निवेदन करना चाहूँगा कि जिस तरह से अध्यक्ष पद के लिए एक नाम आया है, और जिस तरह से दूसरा नाम आया है कांग्रेस दल की ओर से, उससे स्वस्थ परम्परा डालने के लिए कांग्रेस दल उत्सुक है इस का सबूत नहीं मिलता।

**अध्यक्ष महोदय :** उन का नाम यहाँ पर उपस्थित नहीं किया गया। उन के प्रस्तावक नहीं थे, इसलिये नाम पर आपत्ति नहीं की जा सकती।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी :** मैं आपत्ति नहीं कर रहा हूँ। लेकिन इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि इस आर्डर पेपर पर दो कांग्रेसजनों के नाम लिखे हुए हैं।

**अध्यक्ष महोदय :** किसी कागज पर दस नाम लिखे जा सकते हैं, मुझे इसमें कोई मतलब नहीं है। प्रस्ताव को उपस्थित करने के लिए जो प्रस्तावक थे मैं ने उन को बुलाया, लेकिन वे उपस्थित नहीं थे, इसलिए एक ही नाम श्री सर्ज व रेड्डी का रक्खा गया।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी :** इसीलिये इस मांग में बल पैदा हो गया है कि आप मतदान गुप्त रीति से करावें। यह कोई अनुचित मांग नहीं है, और अगर कांग्रेस दल को अपने दल के किसी व्यक्ति पर कोई सन्देह नहीं है तो वह गुप्त मतदान के लिये तैयार क्यों नहीं है।

**Shri Randhir Singh:** How can you allow this discussion when voting is going on?

एक वाक्यांश सचिव . क्या उचित है कि बीच में व्यवस्था का प्रश्न उठाया जाये ?

**Shri Krishna Kumar Chatterjee:**  
Sir, I rise on a point of order. Can the ruling of the Chair be discussed like this? When a ruling has been given by the Chair, can it be discussed? That is my point and I want your ruling on my point of order.

श्री कृष्ण कुमार चटर्जी (दमोह) .  
सभापति की व्यवस्था के बाद यदि विरोधी पार्टियां यह प्रश्न दायें बाएं उठाती हैं तो आप कब तक इसकी इजाजत देंगे, यह मैं पूछना चाहता हूँ। एक बार माननीय अध्यक्ष की व्यवस्था हो चुकी है, इस बारे में निर्णय हो चुका और निर्णय होने के बाद आपने खुलासा कर दिया। उसके बाद आप कितना समय इसके लिये देंगे और कितनी बार इजाजत देंगे।

श्री अजयलाल शर्मा (गुहाबाव) . अगर आप गांधी जी के मन्चे चले हैं तो आपको इस बात को छोड़ देना चाहिये और गांधी जी की बात माननी चाहिये। आप एक पार्टी के हैं। आप फैसला न दीजिये, आप किसी ऐसे आदमी को जो निष्पक्ष हो बिठाइये, ताकि इस बात के साथ इन्साफ हो सके। मैं उम्मीद करता हूँ कि एक गांधीवादी होने के नाते आप इसको महसूस करेंगे कि अपोजीशन के साथ बेइन्साफ़ी नहीं होनी चाहिये। आप यहाँ ऐसे आदमी को बिठाइये जो निष्पक्ष हो ताकि वह सुन सके कि हम क्या कहने हैं।

श्री जयु लिंगबे : मेरी व्यवस्था का तीसरा प्रश्न मतदान के पूर्व बहस कराने के सम्बन्ध में है। हमारे जो नियम हैं उन में .....

डा० महादेव प्रसाद (महाराजगंज) :  
मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न इसके उठाने के सम्बन्ध में है .....

अध्यक्ष महोदय : वही प्रश्न बार-बार घूम-घूम कर आता है, मतदान के सम्बन्ध में। पहली बात है कि इस रूल को सस्पेंड करने की मैं अनुमति नहीं दे रहा हूँ। यह मैंने स्पष्ट कह दिया है। चूँकि मैं रूल को सस्पेंड नहीं कर रहा हूँ इसलिये शुद्ध मतदान का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। और जो भी बातें मुझे सुननी थी, मैं ने उनको सुन लिया है। चूँकि मैं अनुमति नहीं दे रहा हूँ इसलिये हमारे सामने यही बात रह जाती है कि मैं प्रस्ताव आप के सामने मतदान के लिए उपस्थित करूँ।

श्री जयु लिंगबे मैं मतदान के बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ। मेरा प्रश्न मतदान के सम्बन्ध में नहीं है। जब कभी अध्यक्ष पद के लिये एक से अधिक उम्मीदवार ....  
(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय माननीय सदस्य शान्त रहे।

श्री जयु लिंगबे : जब अध्यक्ष पद के लिये एक से अधिक उम्मीदवार होते हैं तो इंग्लैंड में यह प्रणाली है कि बटम हो, और हमारे नियमों में कोई भी वाक्य ऐसा नहीं जिस से इस बहस पर पाबन्दी हो। इसलिये मैं यह व्यवस्था का प्रश्न रख रहा हूँ। इस सम्बन्ध में मेज़ पार्लियामेन्ट्री प्रैक्टिस में पृष्ठ 284 पर साफ लिखा हुआ है कि :

"If another Member be proposed, a similar motion is made and seconded in regard to him; and both the candidates address themselves to the House."

इस लिये मेरी पहली मांग है कि श्री संजीव रेड्डी साहब जी यहाँ आकर वह अध्यक्ष पद के लिये कैसे लायक हैं यह सारे सदन को बतलावें .. (व्यवधान) अब वह सारे लोग क्यों खड़े हैं।

अध्यक्ष महोदय : अब सब लोग बैठ जावें।



**Shri Krishna Kumar Chatterjee:** He is monopolizing the House.

**Shri Ramdhar Singh:** He should not be allowed to speak (Interruption)

**श्री मधु लिमये** इस के बाद हमारे उम्मीदवार भी सदन के सामने आयेंगे। भागे चल कर यह कहा गया है कि

"A debate ensues in relation to the claims of each candidate, in which the Clerk continues to act as presiding officer."

अब क्या मैं यह समझू कि आज से यह किताब खत्म हुई। यह कह दीजिये। फिर उसके बाद सप्तमी प्रणाली, शांभा, प्रतिष्ठा, यह बातें किसी के मुँह से सुनने के लिये मैं तैयार नहीं हूँ। यदि आप सप्तमी प्रणाली पर जाने हैं तो यह बिनाक मेज पार्लियामेन्ट्री प्रैक्टिस के अनुसार है कि श्री मजीब रेड्डी अपने को लायक साबित करें। हमारे उम्मीदवार तैयार हैं अपने-१ लायक साबित करने के लिये। दूसरे लोग भी करें।

**अध्यक्ष महोदय** जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है स्वतन्त्रता के बाद हमने अपने नियम बनाये हैं हमने अपनी परम्पराएँ स्थापित की हैं, और इन प्रकार की कोई हमारी कोई परम्परा या नियम नहीं है जैसा श्री लिमये कह रहे हैं। इस लिये हम अपनी परम्पराओं के अनुसार चलते हैं। हमारी परम्पराओं में इस प्रकार की कोई परम्परा नहीं है कि सब उम्मीदवारों को खड़े हो कर उन में क्या कबिलियत है इसका इजहार करना चाहिये। इस लिये जो पहला प्रस्ताव है उस को मैं आप के सामने रख रहा हूँ।

**श्री राम सेवक दास :** नई प्रणाली प्रारम्भ होनी चाहिये। (व्यवधान)

**श्री मधु लिमये :** नई और अच्छी।

**डा० राम मनोहर लोहिया :** हमारी पुरानी परम्पराएँ अगर किसी चीज के लिये बाधक हों, किसी चीज को मना करे तब उस को आप यहाँ मत शुरू कीजिये। लेकिन पुरानी परम्पराओं में कोई ऐसी बात नहीं है जिस से आज की इस नई प्रणाली को शुरू न किया जा सके। अगर पुरानी परम्पराएँ बाधक होती हैं तब आप भूलवत्ता इस नर्क को दे सकते हैं। लेकिन यह प्रणाली आज आपके सामने रखी गई है उस के ऊपर आप खुद भलग ढंग से विचार करे पुरानी परम्पराएँ अगर कोई खत्म करना चाहता है और आप कह देते हैं कि यह नहीं हो सकता है तब बात भलग है लेकिन जा पुरानी परम्पराएँ हैं वे तो खाली आपको यह बनाती है कि अब तक एक प्रणाली का इस्तेमाल किया गया है। उस एक प्रणाली में यह नहीं कहा गया है कि किसी दूसरी प्रणाली का इस्तेमाल हो ही नहीं सकता है। यह दूसरी प्रणाली आपके सामने आ गई है। इसलिये मैं आपके अन्तःकरण और आपकी आत्मा से अपील करना चाहता हूँ कि आप इस पर जरूर विचार करें। आप अपने दल के सदस्यों को अपनी आत्मा में कुछ भी जगह दें — अगर देना चाहते हैं तो — लेकिन इस पर आप जरूर विचार करें। वरना वही सचेतक के हिसाब से यह काम चल जाएगा।

**श्री राम सेवक दास :** हम धाशा करेंगे कि आप जैसे व्यक्ति द्वारा कुछ नई परम्पराएँ डाली जाएगी, स्वस्थ जनतंत्रीय परम्परा डाली जाएगी। मैंने कई बार सदन में सुना है और जब जब हुआ है अध्यक्ष महोदय की ओर से प्रोग्रेस और बीटे हुए सदस्यों की ओर से मेज पार्लियामेन्ट्री प्रैक्टिस के उद्धरण दिये गये हैं। मेज पार्लियामेन्ट्री प्रैक्टिस से हमारे लिमये साहब ने भी उद्धरण पस्त किया है कि यदि इस तरह की स्थिति हो तो दोनों उम्मीदवार सदन के सामने आयें और अपनी बात रखें। मैं समझता हूँ कि इस चीज को स्वीकार कर लिया जाना चाहिये।

### [श्री राम सेवक याचव]

जहाँ तक हमारे विषयों का सम्बन्ध है, हमारी नियमावली का प्रश्न है, उस में कहीं कोई बाधा नहीं है, इस प्रकार का कोई नियम नहीं है कि जो इस परम्परा को आज अगर हम लागू करना चाहें तो हमें ऐसा करने से रोकता हो। इस वास्ते हमें चाहिये कि हम स्वस्थ परम्परा डालें। आखिरकार कांग्रेस वाले क्यों परेशान हैं? बहुमत इनका है। उसके बल पर ये जो चाहें कर सकते हैं। लेकिन स्वस्थ परम्परा यदि कोई स्थापित करना चाहता है तो उस में ये क्यों बाधा डालते हैं, यह मेरी समझ में नहीं आता है। डीसेंसी और डेकोरम के नाम पर न जाने क्या क्या बातें कहीं गई हैं। आज स्वस्थ परम्परा डालने की बात है। इसको क्यों भानने के लिए ये तैयार नहीं हैं, समझ में आने वाली बात नहीं है चूंकि लोक सभा की शुरुआत उस तरह से नहीं होनी चाहिये जिस तरह से होने जा रही है, स्वस्थ परम्परा, जनतंत्रीय परम्परा डाल कर इसकी शुरुआत होनी चाहिये।

**श्री अजयल शर्मा :** मैं प्रश्न करना चाहता हूँ कि आप इम नेक रस्म को डालें। श्री संजीव रेड्डी जो कांग्रेस के प्रधान भी रह चुके हैं और एक माने हुए सदस्य हैं, वह आ कर अपने विचार रखें कि किस तरह से वह इसको चलायेंगे, कैसे वह अपने को इस काबिल बनायेंगे कि वह सारे हाउस का एनमाद—प्रपोजीशन का भी और आफिशल पार्टी का भी—ले सकें। हो सकता है कि हमारे नेता जो प्रपोजीशन के बैठे हुए हैं वे सब के सब उनके हथकियाल हो जाएं और कहें कि श्री संजीव रेड्डी ही प्रधान पद सम्भालें। मेरी बरकबास्त है कि आप उनको मौका दीजिये। यह भी हो सकता है कि विश्वनाथन जी की बात सुन कर इन्दिरा जी के दिमाग में यह बात आ जाए कि इनको बनना चाहिये, यह अच्छी तरह से कार्रवाई को चला सकेंगे। मैं समझता हूँ कि यह बड़ी मुबारक बात होगी

कि आप के शब्द में यह चीज हो जाए। श्री चिट्तू -साई पटेल जब यहाँ प्रधान पद पर थे तब उन्होंने ऐसी बातें बनाई थीं जो देश के हित में थीं जिन के देश का बकाब बढ़ा था। मैं समझता हूँ कि मेरे भाई जो इस वक्त प्रधान बन कर बैठे हुए हैं, जो गांधीवादी हैं और जिन की जिन्दगी सारे मुक्त के सामने है, हम चीज का साथ देंगे। अगर उनकी बातों को सुन कर कोई अपनी राय बदल सकें तो हाउस का कोई नुकसान नहीं होगा। अगर संजीव रेड्डी साहब महसूस करते हैं कि वह इस काबिल नहीं हैं, उनको पार्टी जबर्दस्ती इस पद पर बिठा रही है, और वह ममजते है कि उनको नहीं आना चाहिये तो उनको कह देना चाहिये कि मेरी कोई इच्छा नहीं है, मैं इमाफ नही कर सकूंगा, मैं पार्टी से ऊपर नहीं उठ सकूंगा, मैं प्रपोजीशन को सम्भाल नहीं सकूंगा और बैम्बी ग़रत मे विश्वनाथन जी को मौका दीजिये कि वह यमीन दिलाये कि वह पार्टी बाजी से ऊपर उठकर काम करेंगे। आप से मेरी प्रार्थना है कि गांधीवादी होने के नाते आप इस हामारी प्रार्थना को स्वीकार कर लें।

**Shri P. Ramamurti (Madurai):** The procedure that you are adopting places the members of this House in a difficult position. After all, many of us may not know who this Sanjiva Reddy or who this Tenneti Viswanathan is. (Interruptions). After all, many members who have been elected and who do not come from anywhere near the place of Mr. Sanjiva Reddy or Mr. Tenneti Viswanathan may not know who these people are. Therefore, we are placed in a very embarrassing position with regard to voting. After all, the election is to the office of the Speaker; the Speaker's job is a very important job. Therefore, every member has got to exercise his vote after understanding the implications of that; the members should be given an opportunity to exercise their vote after understanding the implications

and after knowing the qualifications of every member who wants to stand for Speakership. (Interruptions). This is not treated as a normal election. If it is a normal election, secret ballot and all those things will be there, but here is a motion, and on a motion it is certainly open to every member to express his view with regard to a particular motion as to why he wants the other members of the House do support him and to reject the other motion. Therefore, in order to give the opportunity to every member to exercise his right in a proper way, in an efficient way, in order to see that the dignity of the House is protected hereafter, during the next five years—it is absolutely necessary that every member should be given that opportunity—it is absolutely essential for the two candidates themselves to address this House and tell us what they are (Interruptions). That itself will give the members an opportunity to know the capacity of these two candidates and to find out whether they are fit enough to hold this august office.

एक माननीय सदस्य : मैं भी बोलने दिया जाए। एक उधर से और एक इधर से आप बुलायें। आप उधर से बुलाने जा रहे हैं।

सध्यस्य सहोदय : मैंने वनजी साहब को बुलाया है। आप बैठ जायें। आपको भी बोलने का मैं अवसर दूंगा।

Shri S. M. Banerjee: I fully support Shri Madhu Limaye that a healthy convention should be followed. In this House we generally follow the conventions of the House of Commons, and this particular convention was read out by him. I fail to understand this: why should Mr. Sanjiva Reddy, who is the prospective candidate of the ruling Party for Speakership, not face this House which he has to face if he is unfortunately elected for five years? (Interruptions). I only want to know who is this Sanjiva Reddy. I was a member of this House.

In this House I have discussed the conduct of one Sanjiva Reddy who was in the Congress and who did not have a clean slate. I want to know whether he is the same Sanjiva Reddy and in that case, I would not like to vote for him. So I want to request you to create a healthy convention in this House and allow both the candidates to appear before this august House and say something about themselves.

The Deputy Prime Minister and Minister of Finance (Shri Morarji Desai: It will not be proper for us to make reflections on those who are to be elected. Is it proper for this House to make reflections against them?

Shri S. M. Banerjee: What reflection?

Shri Morarji Desai: It was just now said. I do not want to repeat those arguments because that will be repeating the reflection. I do not think that it will be conducive to the high office or to the dignity of the high office if these two gentlemen have to come here and speak about themselves and then a debate ensues on them and all sorts of things are said. This is not inkeeping with our practice in any case. Therefore, I am raising this point of order in this way that we cannot go on having this debate when it has already been disallowed by the Speaker.

12.00 hrs.

सध्यस्य सहोदय : श्री मोरारजी देसाई ने अपने व्यवस्था के प्रण में जो विचार प्रकट किया है, मैं उस से बिस्कुत सहमत हूँ और मैं समझता हूँ कि इस प्रकार का कोई बाद-विवाद यहाँ होना ठीक नहीं है। इस लिए मैंने उस प्रस्ताव को उपस्थित करने की अनुमति नहीं दी और इस सम्बन्ध में मैंने उन परम्पराओं का जिक्र किया, जो इस सदन में प्रचलित रही हैं। मैं इस बात को उचित नहीं समझता कि श्री संजीव रेड्डी और श्री विष्णुनाथन यहाँ पर

## [अष्टम सहीदय]

अपनी अपनी योग्यताओं के सम्बन्ध में बयान दें। इन्हें पर भी बूँक सदन पहली बार सबसेत हो रहा है, इसलिए मैं ने यहाँ पर अधिक से अधिक सदस्यों को बोलने की अनुमति दी, यद्यपि उम की आवश्यकता नहीं थी।

अब चकि काफी वाद-विवाद हो चुका है, इन लिए मैं नियम के अनुसार पहला प्रस्ताव सदन के मनदान के लिए उद्घोषित करना हूँ।

प्रश्न यह है —

‘कि श्री एन० सजीब रेड्डी का, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।’

गोष्ठी-कक्षों को खाली किया जाये।

अब मैं आप को वह प्रणाली बताता हूँ, जिसके अनुसार मतदान होगा। चकि माननीय सदस्यों के नाम उन की सीटों पर नहीं लिखे गए हैं, इस लिए यन्त्र के द्वारा मतदान करना सम्भव नहीं है। प्रणाली यह है कि सदस्यों को उन के मन रिकार्ड करने के लिए ‘हाँ’ अथवा ‘ना’ की छपी

पत्रियों से से, जो भी लेना चाहेंगे, उनके स्थान पर डी जायेंगी। इन पत्रियों पर सदस्य, पक्षों के नाम पर निश्चित स्थानों पर, अपने हस्ताक्षरों के नीचे अपने नाम भाफ माफ लिख कर अपने मत रिकार्ड करेंगे। अपना मत रिकार्ड करने के तुरन्त पश्चात् प्रत्येक सदस्य अपनी पक्षों की स्वयं अथवा उस मत-विभाजन कर्ता के उम्मीद, जो पत्रिया देने के पश्चात् उन के स्थान पर जायेगा, गम्भा-पटल के निकट बैठे अधिकारियों को देगा।

श्री नयू लिमये यह नियम के विपरीत है।

Mr. Speaker: Members will now be supplied at their seats with ‘Ayes’ or ‘Noes’ printed slips according to their choice for recording their votes. On these slips members will record their votes by writing their names legibly below their signatures at the places specified on the slip form. Immediately after recording his vote, each member should pass on his slip either by himself or through the Division clerk who will call upon his seat after distribution of the slips, to the officers at the Table.

The Lok Sabha divided

## Division No I]

## AYES

[12 39 hrs.

Achal Singh, Shri  
Agarwal, Shri S. A.  
Ahirwar, Shri Nathu Ram  
Aga, Shri Ahmad  
Ahmad, Dr. I.  
Ahmed, Shri F. A.  
Anjanappa, Shri B.  
Ankinesudu, Shri  
Anthony, Shri Frank  
Arumugam, Shri R. S.  
Ager H. uain, Shri  
Avjesh Chandra Singh, Shri  
Asad, Shri Bhagwat Jha  
Sabinath Singh, Shri  
Bajaj, Shri Kamalnayan  
Bajpai, Shri Shaubhushan  
Bajpai, Shri Vidya Dhar  
Barrow, Shri  
Barua, Shri Bedabrata

Barua, Shri R.  
Barupal, Shri P. L.  
Baswant, Shri  
Batra, Shri S. C.  
Bhagat, Shri B. K.  
Bhagwati, Shri  
Bhakti Darshan, Shri  
Bhandare, Shri R. D.  
Bhanu Prakash Singh, Shri  
Bhargava, Shri B. N.  
Bhattacharyya, Shri C. K.  
Bhole Nath, Shri  
Bisr, Shri J. B. S.  
Bohra, Shri Onkarlal  
Brahm Prakash, Shri  
Buta Singh, Shri  
Chanda, Shri Anil K.  
Chanda, Shrimati Jyotsna  
Chandrika Prasad, Shri

Chatterji, Shri Krishna Kumar  
Chaturvedi, Shri R. I.  
Chaudhary, Shri Nitray Singh  
Chavan, Shri D. R.  
Chavan, Shri Y. B.  
Chhatrapati, Shrimati Vijamala  
Choudhury, Shri J. K.  
Choudhury, Shri Velmuki  
Dalbir Singh, Shri  
Damani, Shri S. R.  
Das, Shri N. T.  
Deoghare, Shri N. R.  
Desai, Shri Morarji  
Deshmukh, Shri B. D.  
Deshmukh, Shri K. G.  
Deshmukh, Shri Shrivajiro S.  
Devinder Singh, Shri  
Dhillon, Shri G. S.  
Dhuleshwar Meena, Shri

Dinosh Singh, Shri  
 Drajt, Shri G. C.  
 Hing, Shri D.  
 Gajraj Singh Rao, Shri  
 Gadhvi, Shrimati Indira  
 Ganesh, Shri K. R.  
 Ganpat Sahai, Shri  
 Gantem, Shri C. D.  
 Gavitt, Shri Tukaram  
 Ghansera Singh, Shri  
 Ghosh, Shri Bimalkanti  
 Ghosh, Shri P. K.  
 Ghosh, Shri Parimal  
 Gupta, Shri Lakhmal  
 Gupta, Shri Ram Kishan  
 Hajarnawie, Shri  
 Hanumanthaiya, Shri  
 Hari Krishna, Shri  
 Hazarika, Shri J. N.  
 Hom Raj, Shri  
 Himastalingka, Shri  
 Hicil, Shri  
 Iqbal Singh, Shri  
 Jadhav, Shri Tulshidas  
 Jadhav, Shri V. N.  
 Jagwalia, Shri K.  
 Jagjiwan Ram, Shri  
 Jamir, Shri S. C.  
 Kabsudole, Shri  
 Kamble, Shri  
 Kamsi Kumeri, Shrimati  
 Kasture, Shri A. S.  
 Katham, Shri B. N.  
 Kavade, Shri B. R.  
 Kedarie, Shri C. M.  
 Kesari, Shri Sitaram  
 Khadilkar, Shri  
 Khan, Shri M. A.  
 Khanna, Shri P. K.  
 Kander Lal, Shri  
 Kirat, Shri Manikya  
 Kotaki, Shri Liladhar  
 Kripalani, Shrimati Sucheta  
 Krishna, Shri M. R.  
 Krishnan, Shri G. Y.  
 Krishnappa, Shri M. V.  
 Kureel, Shri B. N.  
 Kushok Bakula, Shri  
 Lakshminikantamma, Shrimati  
 Lalit Sen, Shri  
 Lekar, Shri N. R.  
 Lazmi Bai, Shrimati  
 Lutfal Haque, Shri  
 Madho Ram, Shri  
 Mahadeva Prasad, Dr.  
 Mahesh Singh, Shri  
 Mahida, Shri Narendra Singh  
 Mahishi, Dr. Serojini  
 Mathota, Shri Indrajit  
 Mallikarjuna, Shri  
 Mondal, Shri Yamuna Prasad  
 Mena, Shri Shankarao  
 Moreodi, Shri

Masuria Din, Shri  
 Mehta, Shri Asoka  
 Melkote, Dr.  
 Menon, Shri Govinda  
 Mijimata, Shrimati Agan Dass  
 Guru  
 Mirza, Shri Bakar Ali  
 Mishra, Shri Bibhuti  
 Mishra, Shri G. R.  
 Mohammad Yusuf, Shri  
 Mohasin, Shri  
 Mohinder Kaur, Shrimati  
 Mondal, Shri J. K.  
 Mondal, Dr. P.  
 Mrityunjay Prasad, Shri  
 Mudrika Singh, Shri  
 Mukerjee, Shrimati Sharda  
 Mukne, Shri Yeshwantrao  
 Murthi, Shri B. S.  
 Murti, Shri M. S.  
 Nageshwar, Shri  
 Naghnor, Shri M. N.  
 Nahata, Shri Amrit  
 Naidu, Shri Chengakrays  
 Nanda, Shri  
 Nayar, Dr. Sushila  
 Neamony, Shri  
 Oron, Shri Kartik  
 Padmavati Devi, Shrimati  
 Padadia, Shri  
 Pandey, Shri K.N.  
 Pandey, Shri Vishwa Nath  
 Pandit, Shrimati Vijaya Lakshmi  
 Panigrahi, Shri Chintamani  
 Pant, Shri K.C.  
 Parmar, Shri Bhajibhai  
 Partap Singh, Shri  
 Parthasarathy, Shri  
 Patel, Shri Manibhai J  
 Patel, Shri Manubhai  
 Patel, Shri N. N.  
 Patil, Shri A. V.  
 Patil, Shri C. A.  
 Patil, Shri Deorao  
 Patil, Shri S. R.  
 Patil, Shri S. D.  
 Patil, Shri T. A.  
 Poonacha, Shri C. M.  
 Pradhani, Shri K.  
 Premank, Shri J. N.  
 Prasad, Shri Y. A.  
 Qureshi, Shri Shafi  
 Radhabai, Shrimati B. K.  
 Raghu Ramalah, Shri  
 Raj Deo Singh, Shri  
 Rajani Gaudha, Kumari  
 Rajasakharan, Shri  
 Raja, Shri D. B.  
 Raju, Shri D. S.  
 Ram Dhan Deo, Shri  
 Ram Kishan, Shri  
 Ram Subhag Singh, Dr.  
 Ram, Shri T.

Ram Dhan, Shri  
 Ram Sewak, Shri  
 Ram Swarup, Shri  
 Ramesh Chandra, Shri  
 Rampur Mahadevappa, Shri  
 Ramakhar Prasad Singh, Shri  
 Rama, Shri M. B.  
 Randhir Singh, Shri  
 Rane, Shri  
 Rao, Shri Jagannath  
 Rao, Dr. K. L.  
 Rao, Shri K. Narayana  
 Rao, Shri Muthyal  
 Rao, Shri J. Ramapathi  
 Rao, Shri Rameshwar  
 Rao, Shri Thirumala  
 Rao, Dr. V.K.R.V.  
 Raut, Shri Bhola  
 Reddi, Shri G. S.  
 Reddy, Shri Ganga  
 Reddy, Shri P. Anthony  
 Reddy, Shri R. C.  
 Reddy, Shri N. Sanjiva  
 Reddy, Shri Surendar  
 Rohatgi, Shrimati Sushila  
 Roy, Shri Abhwanath  
 Roy, Shri Chittaranjan  
 Roy, Shrimati Uma  
 Sadhn Ram, Shri  
 Sahe, Shri S.K.  
 Saigal, Shri A. S.  
 Saleem, Shri M.Y.  
 Salve, Shri N.K.  
 Sambasivam, Shri  
 Sanghi, Shri N.K.  
 Sanji Rupji, Shri  
 Sankata Prasad, Dr.  
 Sant Bux Singh, Shri  
 Sarma, Shri A.T.  
 Savitri Shyam, Shrimati  
 Sayyad Ali, Shri  
 Sen, Shri Dwaipayan  
 Sen, Shri P.G.  
 Sethi, Shri P. C.  
 Sethuram, Shri N.  
 Shah, Shrimati Jayaben  
 Shah, Shri Manabendra  
 Shah, Shri Shantilal  
 Shambhu Nath, Shri  
 Shankaranand, Shri  
 Sharma, Shri D. C.  
 Shashi Ranjan, Shri  
 Sheetri Shri B.N.  
 Shaetri, Shri Ramenand  
 Sheo Narain, Shri  
 Sher Singh, Prof.  
 Sheth, Shri T. M.  
 Shinde, Shri Annasahib  
 Shiv Chandrika Prasad, Shri  
 Shivananjappa, Shri  
 Shukla, Shri S.N.  
 Shukla, Shri Vidya Charan  
 Siddagya, Shri

Bidgishwar Prasad, Shri  
Singh, Shri D. N.  
Singh, Shri D. V.  
Sinha, Shri R. K.  
Sinha, Shri Satya Narayan  
Sinha, Shrimati Tarkaghwari  
Snatak, Shri Nar Deo  
Solanki, Shri S. M.  
Somar, Shri A. G.  
Somavane, Shri  
Sundarshan, Shri M.

Sunder Lal, Shri J.  
Sunder Lal, Shri  
Sapkar, Shri Sadhakar  
Suresh Pal Singh, Shri  
Suryanarayana, Shri K.  
Swamy, Shri G Venkat  
Swaran Singh, Shri  
Tamaskar, Shri  
Tarodekar, Shri V. B.  
Tiway, Shri D. N.  
Tiway, Shri K. N.

Tripathi, Shri K. D.  
Tula Ram, Shri  
Tulsidas, Shri  
Ukhey, Shri M. G.  
Ulaka, Shri Ramachandra  
Veersappa, Shri Ramachandra  
Venkatesubbaiah, Shri P.  
Verma, Shri Balgovind  
Verma, Shri P. C.  
Yadav, Shri N. P.  
Yadav, Shri Chandra Jee.

## NOES

Abdul Geni, Shri  
Abraham, Shri K. M.  
Adichan, Shri P. C.  
Ahmed, Shri J.  
Amat, Shri D.  
Amersey, Shri M.  
Amin, Prof. R. K.  
Amin, Shri Ramchandra J.  
Anbazhagan, Shri  
Anbuchezhian, Shri  
Anrudhan, Shri K.  
Atam Das, Shri  
Badraddaya, Shri  
Banerjee, Shri S. N.  
Barua, Shri Hem  
Bari, Shri S. S.  
Basu, Shri Jyotirmoy  
Basu, Dr Maitreya  
Behara, Shri Balidhar  
Berwa, Shri Onkar Lal  
Bhadoria, Shri Arjun Singh  
Bhagaban Das, Shri  
Bharat Singh, Shri  
Bharti, Shri Mahara Singh  
Bhatia, Shri R. K.  
Biswas, Shri J. M.  
Bramhanandji, Shri  
Brij Bhuvan Lal, Shri  
Brij Raj Singh—Kotah, Shri  
Brijendra Singh, Shri  
Chakrapani, Shri C. K.  
Chandra Shekhar Singh, Shri  
Chatterjee, Shri H. P.  
Chatterjee, Shri N. C.  
Chaudhuri, Shri Tiddib Kumar  
Chittibabu, Shri C.  
Chowdhury, Shri B. K. Das  
Dandekar, Shri M.  
Danga, Shri S. A.  
Deivekan, Shri  
Deo, Shri K. P. Singh  
Deo, Shri P. K.  
Deo, Shri R. R. Singh  
Dey, Shri C. C.  
Dessi, Shri Dinkar  
Devgan, Shri Hardeva  
Dhondapani, Shri

Dhirendranath, Shri  
Dugvijai Nath, Mahant  
Dipa, Shri A.  
Dwivady, Shri Surendranath  
Eathose, Shri P. P.  
Ghosh, Shri Ganesh  
Guraj Saren Singh, Shri  
Goel, Shri Shri Chand  
Gopalan, Shri A. K.  
Gopalan, Shri P.  
Gopalan, Shrimati Suseela  
Gopalan, Shri D. S.  
Gunder, Shri C. Muthusamy  
Gonndar, Shri Muthu  
Gowd, Shri Gadilingana  
Gowda, Shri M. H.  
Gowder, Shri Nanja  
Guha, Prof. Samar  
Gupta, Shri Indrajit  
Gupta, Shri Kanwarlal  
Halder, Shri K.  
Jagadehwar, Shri  
Jai Bahadur Singh, Shri  
Jamna Lal, Shri  
Janardhanan, Shri C.  
Jena, Shri D. D.  
Jha, Shri Bhogendra  
Jha, Shri S. C.  
Joishi, Shri Jagannath Rao  
Joshi, Shri S. M.  
Kachhavaya, Shri Hukam Chand  
Kalita, Shri Dhureswar  
Kamalanathan, Shri  
Kameshwar Singh, Shri  
Kandappa, Shri S.  
Kapoor, Shri Lakhan Lal  
Karni Singh, Dr  
Kasnik, Shri K. M.  
Kedar Pagwan, Shri  
Khan, Shri Ajmal  
Khan, Shri Ghayoor Ali  
Khan, Shri Latefat Ali  
Khan, Shri Zulfikar Ali  
Kikar Singh, Shri  
Karottinan, Shri  
Kishu, Shri A. K.  
Kuthari, Shri S. S.

Krishnamoorthi, Shri V.  
Kuchelar, Shri G.  
Kundu, Shri S.  
Kunte, Shri Dattatraya  
Kushwah, Shri V. S.  
Lakkappa, Shri K.  
Limaye, Shri Madhu  
Lobo Prabhu, Shri  
Lohia, Dr. Ram Manohar  
Madhok, Shri Bal Raj  
Madhukar, Shri K. M.  
Marty, Shri S. N.  
Majhi, Shri M.  
Mandal, Shri B. P.  
Mangalathumadam, Shri  
Manoharan, Shri  
Marandi, Shri  
Mayavan, Shri  
Meetha Lal, Shri  
Meghehandra, Shri N.  
Menon, Shri V. V.  
Misra, Shri Srinibas  
Modak, Shri B. K.  
Mody, Shri Pilo  
Mohamed Imam, Shri  
Mohammad Ismail, Shri  
Mohan Swarup, Shri  
Molatu, Shri  
Mukerjee, Shri H. N.  
Mulla, Shri A. N.  
Naidu, Shri Ramabhadra  
Nalik, Shri G. C.  
Nalik, Shri R. V.  
Nair, Shri N. Srockantan  
Nair, Shri Vasudevan  
Nambiar, Shri  
Narayanan, Shri  
Nayyar, Shri H. K.  
Nayar, Shri K. K.  
Neyyar, Shrimati Shakti  
Nihal, Shri  
Nirup Kaur, Shrimati  
Onkar Singh, Shri  
Padanatha, Shri Mohammed S.  
Pandey, Shri Surjee  
Pannar, Shri D. R.  
Patel, Shri Baburao.

Patel, Shri J. H.  
Patel, Shri Prakash  
Patil, Shri N. R.  
Patel, Shri D. N.  
Patil, Dr. Surya Prakash  
Patil, Shri Chandrajeet  
Rajaram, Shri  
Ram Singh, Shri  
Ram Charan, Shri  
Ram Lal, Shri  
Ramamurthy, Shri P.  
Ramamurti, Shri P.  
Raman, Shri K.  
Ranjit Ram, Shri  
Ranjit Singh, Shri  
Rao, Shri Durga  
Ray, Shri Rabi  
Reddy, Shri Bawa  
Sahoo, Shri Shripal  
Sawant, Shri S. C.  
Sambandhan, Shri S. K.  
Sambhal, Shri Ishaq

Sambandhan, Shri  
Santosham, Shri  
Sanyal, Shri N. Singh, Shri  
Sen, Shri Daven  
Sen, Dr. Ranen  
Sengupta, Shri  
Shah, Shri T. P.  
Shah, Shri Vitendra Kumar J.  
Sharma, Shri N. S.  
Sharma, Shri B. S.  
Sharma, Shri N. S.  
Sharma, Shri Ram Avtar  
Sharma, Shri Yash Datt  
Sharma, Shri Yogendra  
Shastri, Shri Prakash Var  
Shastri, Shri R.  
Shastri, Shri Raghuvar Singh  
Shastri, Shri Shiv Kumar  
Shastri, Shri Sheopujan  
Shiv Charan Lal, Shri  
Shivappa, Shri N.  
Singh, Shri J. B.

Sivashankar, Shri  
Solanki, Shri P. M.  
Somani, Shri N. K.  
Sondhi, Shri M. L.  
Sreedharan, Shri A.  
Srinivasan, Shri  
Subramanian, Shri  
Suresh, Shri  
Tajwar, Shri S. K.  
Thakur, Shri Gunanand  
Thakur, Shri P. R.  
Tyagi, Shri C. P.  
Umanath, Shri  
Vajpayee, Shri A. B.  
Vidyaarthy, Shri R. S.  
Vijayambharan, Shri P.  
Vishwanathan, Shri G.  
Vishwanatham, Shri Tenneti  
Xavier, Shri S.  
Yadav, Shri Ram Suresh  
Yajnik, Shri  
Yashpal Singh, Shri

12.35 hrs.

# FELICITATIONS TO THE SPEAKER

[MR. SPEAKER (Shri N. Sanjiva Reddy)  
in the Chair].

The Prime Minister and Leader of  
the House (Shrimati Indira Gandhi):  
Sir, we are the proud members of one  
of the leading Parliaments of the  
world. The Speaker is the custodian  
of the dignity and power of this  
august House. Not only does the  
Speaker regulate the business of this  
Lok Sabha but he must safeguard the  
rights of each individual member.  
Since the members themselves derive  
their mandate from the people  
through free and open elections, the  
Speaker is in effect the conscience of  
the electorate. That is why he ranks  
with the Chief Justice in the dignity  
accorded to him in our country.

The Speaker must at all time be  
alert and sensitive to the rights of  
M.P.s. All matters which are of national  
interest, or are deemed to be so,  
must naturally be allowed. But I am  
sure that the Speaker will use his  
firm and fair control to keep up the  
dignity and decorum of the  
House....

अध्यक्ष महोदय : इस के पहले कि जो  
कुछ मतदान हुआ है, उसका नतीजा आपके  
सामने घोषित करूँ, मैं आप से यह आनन्द  
वाहता हूँ कि प्रत्येक सदस्य ने अपना मत दे  
दिया है, क्या कोई ऐसे सज्जन हैं, जिन्होंने  
अपना मत नहीं दिया है।

एक सदस्य ने एक ही मत दिया है, अपने  
स्पष्ट हस्ताक्षर कर के, इस में तो कोई गड़बड़  
नहीं हुई है?

इस प्रकार जो मतदान हुआ है, उस से  
आप सब को सन्तोष है? तब मैं आपको  
बतलाऊँ कि "हा" वालों के पक्ष में 278  
सदस्य हैं और "न" वालों के पक्ष में 207  
सदस्य हैं। इस लिए श्री एन० सजीव रेड्डी  
इस सदन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

The motion was adopted.

(Shri N. Sanjiva Reddy was con-  
ducted to the Chair by the Prime  
Minister (Shrimati Indira Gandhi  
and Shri M. R. Masani).

डा० एन. सजीव रेड्डी (कम्रीज) :  
बाली बोका बोका कहती हो, कभी न्याय  
भी कहना सीखोगी?

**Shrimati Indira Gandhi:** Naturally, Sir according to the rules and regulations, provided under our constitution. At the same time, I think it is necessary to persuade hon. Members from all sides of the House to avoid passion and prejudice. We, the members of this House, on our part, must help you, Sir, by exercising on ourselves restraint and responsibility.

Sir, you have been closely connected with our party but the party fully appreciates the role of the Speaker and realises that the Speaker must not be a political person . . .

**Shri Vasudevan Nair (Peermade):** Will he resign from the party?

**Shrimati Indira Gandhi:** . . . and that he must sever his political connections. Contest for the Speakership is not unusual or abnormal, but once chosen, the Speaker belongs to all sections of the House. His office makes him so. He must naturally win the confidence of all parties and members by his impartiality, and fairness in his decisions and rulings. An equal responsibility devolves on the rest of us to help in defending the rights of the chair and in upholding the highest standards of conduct in this House.

✓ On behalf of this House, may I felicitate you, Sir, and offer you our full support in the discharge of the onerous duties and burdens which you have taken upon yourself? ✓

**Shri M. E. Masani (Rajkot):** Mr Speaker, Sir, I would like to associate myself with a great deal of what has just fallen from the lips of the Leader of the House. It is a matter of deep regret that there should have been a controversy, and indeed a contest, over the occupancy of this high office. If I may be permitted to say so, if certain suggestions which had been made by some of us had been responded to, the unfortunate scenes that were seen this morning could have been avoided. But, anyway, that is a matter of the past.

As the Prime Minister has rightly said, you, Sir, now cease to belong to any party and belong to the whole House. I am quite confident that you will act in that manner and that you will be fair and dispassionate as between member and member, as between party and party and as between Government and Opposition. I am confident that you will maintain the high traditions that your predecessors have set in occupying this Chair. I would also like to venture the hope that there are some other ways in which you will follow the conduct that Speakers of the House of Commons in Britain have set before themselves when they were moved to the chair.

On behalf of my own Party, I offer you, and assure you of, the fullest co-operation. We have, in the past five years and more, given that co-operation to your predecessor, and we shall certainly continue to give it to you in the same measure.

I would also like, if I may, to give the same assurance to you on behalf of other sections of the Opposition.. (Interruption).

डा० राज मनोहर लोहिया बाहू भाई  
बाहू, जाबाब मयानी साहब। चापलसो कर  
के बिगेषाधिकार ने लो। बहुत बचटा है।

**Shri M. E. Masani:** In that case, Sir, I will not presume to give any assurance on behalf of other sections of the Opposition. I am sure my colleagues here will speak for themselves. But I should like to think that you will get the co-operation of the entire Opposition also.

श्री अमल सिन्हाजी बाबापेयी (बलरामपुर):  
अध्यक्ष महोदय, आप इस सदन के अध्यक्ष चुने गये हैं। अध्यक्ष पद विष्णुनाथ के सिंहासन जैसा होता चाहिये, जिस पर बैठने वाला स केवल न्याय करे अर्थात् यह भी बिसाई दे कि वह न्याय कर रहा है।



बीजे आम चुनाव के बाद देश में एक स्थिति परिलक्षित हो रही है। सत्ता पर एक एक दल का एकाधिकार समाप्त हो गया है, और जनता ने परिवर्तन की अपनी इच्छा, अमनविषय शब्दों में प्रकट की है। यह आवश्यक है कि जन भावनाओं का सही प्रतिनिधित्व इस सदन में हो और संविधान की मर्यादा का पूरा पालन किया जाये। इस का भार आप के ऊपर आया है। संविधान के अनुकूल, नियमों का पालन करते हुए, निष्पक्षता के साथ सदन के सदस्यों की मर्यादा का, गरिमा का आप को रक्षण करना है। इस कार्य में हम आप को सहयोग देना चाहेंगे।

अच्छा होता कि जो विवाद आपके पद को ले कर हुआ उस को टाला जा सकता, लेकिन ऐसा लगता है कि कांग्रेस दल चुनाव के परिणामों से पूरी तरह सबक सीखने के लिये तैयार नहीं है। हम उसे समय देते हैं, प्रतीक्षा करने के लिये तैयार हैं हम आशा करते हैं कि यह सदन अपने दायित्वों का ठीक तरह से पालन करेगा, और आप के द्वारा हम सब को न्याय मिलेगा।

एक माननीय सदस्य : उपदेश दिये जाओ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जो उपदेश के अधिकारी हैं उन को उपदेश देने से कभी बाज नहीं आया जायेगा। लेकिन यह टोका-टाकी, अट्यक्ष महोदय, सदन की मर्यादा को बढ़ाने वाली नहीं है। कांग्रेसजनों का आचरण अगर ऐसा हो कि सदन की मर्यादा न रहे तो केवल प्रतिपक्ष के भरोसे सदन की मर्यादा नहीं रहेगी। हम अपना पार्ट भदा करने के लिये तैयार हैं अगर कांग्रेस के सदस्य भी उस में शामिल होने के लिये तैयार हों।

Shri K. Ambabagan (Tiruchengode): Mr. Speaker, Sir, I deem it a great honour to be elected to this august House and represent the DMK Party which has now become the ruling party of the Madras State. Though this is my maiden speech, I deem it

pleasure for me to felicitate our hon. Speaker on his being elected to the high office.

Sir, the contest for the election of the hon. Speaker might have been avoided if the ruling party, which has got its majority in this House, had cared to take the consensus of opinion of the Opposition Party leaders also so that, if the high office is filled up by unanimous choice, the Speaker's control of the House might have been better. But even now, on behalf of the DMK Party, which had been a group here even in the last Lok Sabha and had earned a very good name from the hon. Speaker who was presiding then, I wish to say that we will co-operate with the hon. Speaker in order to have a better constitutional government and also to upgrade the democratic rights of the people.

At the same time I wish to remind that the hon. Speaker, who is elected now, has been a minister of the composite State of Madras, then the Chief Minister of Andhra Pradesh and then a Cabinet Minister of the Union Government, specially known as the Minister of the steel portfolio, and has been a person of so many controversies. He has also been the President of the All India Congress Committee and now occupies a chair which naturally does not suit his role earlier. Even then, because of his culture, his capacity, his understanding and ability, I hope that he will occupy the Chair with all the honour and dignity that is expected of the high office which had been occupied by eminent men and which has set the guide-lines for democracy in this country.

I would like to say now as the election is over and you are now made the Speaker, and so a common man without any party bias because you are occupying a seat which is, more or less, comparable only with the seat of a Judge. I wish to express that we will obey your orders, that we will accept your commands and, at the same time, we wish that your

[Shri K. Anbazhagan]

orders and commands and also the rulings, though I find in the rules that the consent of the Speaker is to be obtained very often. I hope that the Speaker will give his consent liberally so that the democratic rights that are to be exercised by the Opposition parties in this House are fully exercised. I also wish that the Leader of the House cooperates in such efforts whenever the Opposition finds that their voice is to be heard in this House and also I desire, because of the lean majority that is attained by the ruling party, at present, the Opposition voice will have to be heard in full and in its full vigour and for that purpose I wish not merely the heads are counted here to carry on the democratic process but the hearts are taken into account and the feelings of the people are counted upon by the hon. Speaker as well as the ruling party.

I wish, Sir, under your guidance, one who has come from the South where the democratic spirit is kept up by the people from the age of Tiruvalluvar, who lived two thousand years ago, parliamentary democracy will flourish well. To quote Tiruvalluvar saying as in Tirukkural:

*Idipparai Illadha Enara Mannan.*

*Keduppar Illanum Kedum—(Tamil)*  
"The king who is without the guard of men, who can rebuke him will perish, even though there may be no one to destroy him."

It is a wise saying written in those days, when it was the age of Monarchs. Now these are the days of democracy and as we are, more or less, interested in encouraging the democratic spirit and, therefore, I wish this quotation may be borne in mind and the saying may be taken as our guide-lines.

I wish the present session will be successful by all means in implementing the wishes of the people and

especially the poor and the down-trodden, and I assure that the DMK party will cooperate with the hon. Speaker in full, and I wish every success to the hon. Speaker.

Shri S. A. Dange (Bombay Central South): Mr Speaker, Sir, on behalf of the Communist Party, I offer you felicitations for being elected to the Speakership of this House. While the question was being debated, there was often a reference to past traditions. May I wish you to note that the composition of this House today is a definite break with past traditions? Past traditions, therefore, should not be the guiding lines for conducting the business of this House for you, Sir. I hope you will break with what was bad in the past traditions and establish new democratic traditions in consonance with the new spirit that is in this House today.

श्री राम सेवक दास (भारतवर्षी) : संयुक्त समाजवादी दल की ओर से अध्यक्ष पद पर चुने जाने के लिए बधाई स्वीकार करें। श्रीमान्, जो कुछ अध्यक्ष पद के चुनाव के अवसर पर हुआ वे स्वस्थ परम्परायें नहीं कही जा सकतीं। मैं आशा करता हूँ कि अब आप चुने गये हैं अध्यक्ष पद पर तो आप अब से स्वस्थ परम्परायें डालेंगे और आपका सम्बन्ध सत्ताशुद्ध दल से किसी भी तरह से नहीं रहेगा। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने को ऐसा योग्य बनायेंगे कि आइया आप स्वतन्त्र उम्मीदवार की हैसियत से चुनाव लड़ें ताकि इस सदन में नई परम्परा चले।

सदैव शिष्टाचार और शोभा की चर्चा चलती है। मैं निवेदन करता हूँ कि नियम और संविधान का पालन करने से ही शिष्टाचार और यहाँ की व्यवस्था ठीक से चल सकेगी। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप इस सदन की जन आकांक्षाओं का सर्व्वथर्व्व करेंगे। जब इस देश के अन्दर कोई भी

झुली है और उसका समाधान नहीं होता है और उसका बर्तन पर उठाया जाना किसी तरह से रोका जाता है, तो वह स्वस्थ परम्पराओं के प्रतिकूल होगा। मैं आशा करता हूँ कि आपके रहते यह सब जन आकांक्षाओं का अर्थ बन जाएगा।

**Shri A. K. Gopalan (Kasargod):** On behalf of my Group in Parliament, I wish to express my sentiments. Sir, you have been elected as the Speaker of this Lok Sabha. If the ruling Party had taken into consideration the changes that have taken place in this country after the Fourth General Elections, the correlation of forces outside and inside this Parliament, then certainly the unhealthy controversies and the unfortunate and regrettable things would not have happened during the time of your election as Speaker.

I also want to understand this. The Prime Minister said that once a person is elected as Speaker, he is above the Party. Sir, you had been the President of the Congress; you were in the Working Committee—I do not know whether you have now resigned your membership of the Working Committee; you were a top leader of the Congress Party. If, immediately on your election, all these things can be forgotten and you can just become above Party, it will be a miracle. Anyway, such a thing cannot happen unless one persists about it and immediately so adjusts himself to the circumstances. I know that you can feel the pulse of the people and you can change. I also think that you will understand and you will try to see what was the reason for all those things that took place in the last Parliament and also today and why these things are taking place. It is because of what is happening in the country today. We are made victims of the rules and procedures that had been formulated years ago, without understanding the changes in the country. If the Opposition is not allowed to

represent the grievances of the people, the sufferings of the people outside, and bring before this House, with your permission, the things that are happening outside, then such a thing would happen. My first request to you is to see what changes can be made as far as the rules and procedures and old traditions are concerned. Unless those changes are made, I think the Opposition will find it very difficult to co-operate with the Speaker.

I also want to say this. The dignity and decorum of this House is often talked about. What is the dignity and decorum of this House? It is that we always look to things that are happening outside, to the sufferings of the people and to certain things that are happening outside, take them up immediately and ask the ruling Party as to what they are going to do on those issues and how they feel about them. If you do that, certainly the decorum of this House will be there and the people will feel that they have got their elected representatives to represent their grievances, to represent immediately certain things that happen outside. I hope you will immediately go into this question. Even this morning what has happened? It is not a question of rule; it is a question whether we can adapt ourselves to the changed circumstances and see that the wishes of the Opposition, which are correct, are agreed to and accepted. I think you, as Speaker, will try to see that such things as had happened in the morning, do not happen. If you can make a departure from some of the old traditions and rules that are there, I think you will be able to get the co-operation of the whole House. I hope you will immediately go into the question as to what changes in the rules and procedures should be made.

**Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara):** Sir, I welcome you to this high office and I assure you of full co-operation on behalf of my

[Shri Surendranath Dwivedi]

party in maintaining the high prestige and honour of democratic institutions and in maintaining the dignity and decorum of this Parliament.

The Speaker's position under the present circumstances is a very crucial one, and on it very much will depend. The future of Indian democracy, its character and the conduct and maintenance of order inside the House are entirely the responsibility of the Speaker and the behaviour of the Speaker will have a great effect and bearing on the conduct of the House.

All controversies are over after your election, and I would expect that conscious as you are and as you must be, about the political situation and about the party positions in this House, you would behave in such a manner as if you have been elected by the consensus of the House and you would give no occasion to conduct in a manner in which differences will be accentuated and we shall depart from the traditions that we have built up so far.

Shri N. C. Chatterjee (Burdwan): Mr. Speaker, Sir, convention demands that we should offer our felicitations to you on your elevation to this high office.

I had the privilege to function in this House under three distinguished Speakers, namely Shri Mavalankar, Shri Ananthasaynam Ayyangar and Sardar Hukam Singh. They had set good traditions, and I am quite sure that you will emulate them.

After the elections were over and we came to Delhi, I had the privilege along with one Member of Parliament to plead that the lame-duck session of the Third Lok Sabha should be avoided and we are very happy that the ruling party resorted to the method of consensus, obtained the opinions of the leaders of the other groups and called off the lame-duck session and responded to our advice.

When the Prime Minister sent for us and summoned a conference of the Opposition Members, we pleaded that the same method of consensus should be followed in electing the Speaker, but we are sorry and we are disappointed that that was not done. But we hope that that will not deter the good relationship between the House and yourself on that account.

I had been talking to the ex-Speaker Sardar Hukam Singh this morning and he assured me that immediately he was elected as the Speaker, he announced that he was dissociating himself from the ruling party. I hope that you, Sir, will also announce that you are resigning from that party and there will be no cause for any grouse by reason of your association, with that party which is a very powerful party or of your association, or former association with a very powerful Syndicate and that you will completely sever your connections with the party.

Shri Hem Barua (Mangaldai): The Syndicate does not exist now and it is liquidated.

Shri N. C. Chatterjee: It is a happy thing that the Syndicate is liquidated and I hope that it is liquidated for ever. You are the Speaker of the greatest democratic Chamber in Asia, if not in the world. I wish you all success and you can depend on our co-operation.

Shri Ebrahim Sulaiman Sak (Kozhikode): Mr. Speaker, Sir, I consider it a matter of great privilege and pride to offer my hearty felicitations to you on your election to the high office of the Speaker of Lok Sabha which is considered to be the Parliament in the biggest democracy in the East.

13 hrs.

I offer you felicitations on behalf of my Group, the Muslim League Group in this Parliament.

Just now the hon. Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, rightly pointed out that you are the custodian of the dignity of this House. I entirely agree with her. I have every hope that you will do full justice to all groups and all parties in this Lok Sabha, and I assure you that when justice is done, you will have the confidence of all sections of the Opposition and full cooperation from our side. I also hope that under your Speakership not only the noble traditions of the great Speakers of the Lok Sabha will be kept up by you, but we will go forward in the evolution of democracy in our country on the right lines.

Wishing you all success, I shall conclude by quoting with your permission one Urdu couplet:

ह्यात से के बलो,  
कावनात से के बलो,  
बलो तो सारे जमाने को  
साज से के बलो ।

حیات سے کے بलो،

کائنات سے کے بلو -

جلو تو سارے زمانے کو،

ساز سے کے بلو -

जी प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) :  
अध्यक्ष महोदय, जीने सामान्य निर्वाचनों के बाद भारत देश और भारत का जनतंत्र दोनों ही परीक्षण की कसौटी पर तुल गये हैं। हमारे जनतंत्र के परीक्षण का सब से प्रमुख स्थान भारतीय संसद् है। भारतीय संसद् के अध्यक्ष के चुनाव के लिए जो पद्धति और परम्परा अपनाई गई है, यदि उस में इन अग्रिम घटनाओं से बचा जा सकता, तो यह स्थिति देश के लिए बड़ी शुभ होती।

परन्तु जो कुछ भी हुआ, अध्यक्ष के चुनाव के बाद हमें भारतीय जनतंत्र के सब से बड़े परीक्षण-स्थल में आज से एक नये

अध्यक्ष का प्रारम्भ करना है। हमारे देश में कुछ स्थान ऐसे हैं, जो दलीय स्तर से सर्वथा ऊपर हैं, जिन में राष्ट्रपति और राज्यपालों के अतिरिक्त आप का पवित्र स्थान भी आता है। पीछे राजस्थान में जो कुछ घटनायें घटी, उन से यह प्रतीत होता है कि भारतीय जनता इस बात पर विचार करने लगी है कि इन स्थानों पर दल-विशेषों से सम्बन्धित व्यक्तियों का आसीन होना कहाँ तक उचित रहेगा। मुझे आशा करनी चाहिए कि आप जिस पवित्र आसन पर आज आसीन हुए हैं, उस पवित्र आसन से उस प्रकार की अग्रिम झलक देखने और सुनने को नहीं मिलेगी, जिस प्रकार की अग्रिम झलक राजस्थान की घटनाओं से देश को देखने और सुनने को मिली है।

आप को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि इस देश में भारतीय भाषाओं का बड़ी तेजी से उठाव हो रहा है और कल देश के जिन प्रतिनिधियों ने संसद् में शपथ ग्रहण की है, उन में से अधिकांश भारतीय भाषाओं के उठाव के प्रति रुचि रखते हैं। मुझे विश्वास है कि जिस पवित्र आसन पर आप आज आसीन हुए हैं, उस के द्वारा उन भावनाओं को और बल मिलेगा, जिन के प्रतीकस्वरूप संसद् के अधिकांश सदस्यों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से शपथ ग्रहण की है।

जिस पवित्र स्थान पर आप बैठे हुए हैं, इस प्रकार के न्याय के ऊँचे स्थानों पर बैठने वाले व्यक्तियों के लिए ऐतरेय ब्राह्मण में एक परम्परा निर्धारित की गई है। जो व्यक्ति जनता के सर्वोच्च प्रतिनिधि के रूप में आसन होते हैं, उनको जनता के सम्मुख अपनी पवित्रता का व्रत लेना पड़ता है और उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ता है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार वह व्यक्ति उस आसन पर खड़े हो कर यह व्रत लेता है : "यां च रात्रिमजायेथा यां च प्रैतासि तदुभयमन्तरेण में इष्टापूते नश्येरन् यदि ते हुष्टेरनिति ।" अर्थात् "हे

## [ श्री प्रकाशवीर काशी ]

ब्रह्म, जिस पवित्र आसन पर कूने विश्वास के साथ मुझे बिठाया है, यदि मैं तेरे साथ झगड़ूँ, तो मेरे उन सब पुण्य कर्मों का क्षय हो जाये, जो मैंने अपनी जन्म की बड़ी और अपनी जीवन लीला समाप्त करने की बड़ी के बीच में किये हैं।" मुझे विश्वास है कि आप इस पवित्र आसन पर बैठ कर ऐतरेय ब्राह्मण की प्रतिज्ञाओं और व्रत का भी पालन कर सकेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं अपने निर्दली संघटन के सदस्यों की ओर से आपको सहयोग का आश्वासन देता हूँ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, क्या आप ऐतरेय ब्राह्मण में दिया गया संकल्प ले रहे हैं। यह एक बड़ा धक्का सुझाव है। आप उठ कर इस व्रत को सोहरा दीजिये।

Shri Frank Anthony (Nominated—Anglo-Indians): Mr. Speaker, Sir, I venture to welcome you on behalf of the Independent Parliamentary Group. We are the oldest group of Independents functioning continuously .... (Interruption).

Mr. hon. Member: How many are you?

Shri Frank Anthony: We will be a very considerable number; wait, do not worry about that.

In spite of these cheap jibes, I have the privilege of being not the oldest but the second seniormost member of this House, and the most senior member on this side of the House.

I would have preferred that there should not have been a contest, not that a contest in itself is bad. I have seen many contests from the time of the President of the Legislative Assembly. As a matter of fact, I do not know how many members will remember the very close contest for

the election of Mavalankarji, the Mr. Speaker of this House, and my friends who indulge in cheap jibes perhaps do not know that, although nominated, mine was one of the two votes that swung the voting in favour of the non-official candidate. Why I refer to Shri Mavalankar is this that although he won by a very narrow majority of two votes, he was completely even-handed in his dealings with every section of the House.

My hon. friend Mr. Masani expressed the hope that there might have been a consensus in this matter. I also would like to have seen one. We have not yet moved sufficiently towards achieving the convention of the House of Commons. My hon. friend Mr. Madhu Limaye had canvassed that there should be unanimity of choice, that there should be a complete severance of any political affiliations, but as my hon. friend Mr. Gopalan mentioned, being a very politicalised people, I do not know whether the Speaker can become completely an apolitical animal.

But, be that as it may, I think there is some misunderstanding. I do not know who canvassed it, but I was talking to my hon. friend Mr. Dwivedy I was one of the members the Prime Minister had spoken to, and I at least was under the impression that there was an understanding that the Speaker would come from the majority party and the Deputy Speaker from the Opposition. There has been some misunderstanding, and my view was that if there was some kind of a movement towards that, if the majority party chose to have a particular person, they should have been allowed some discretion in this matter. I do not know if everybody on this side was aware of it, I know my hon. friend Mr. Dwivedy was not, that the Government or the ruling party had already committed themselves to accepting the nominee of the Opposition

for the Deputy Speakership. I think it is extremely good.

May I, in conclusion, say with great respect that the responsibility for maintaining the dignity of the House, and indeed the high office of Speaker, which symbolises the dignity of the House, will rest more heavily on the Opposition than indeed on the majority party?

Finally, may I say this—the Prime Minister has drawn attention to it—that you rank with the Chief Justice of India, that in the completely new context of this House, yours is not only an exacting, onerous, high office, it is going to be crucial for the development of democracy? And As Mr. Vajpayee said, in this high office—it is not, in my respectful submission, quasi-judicial; it is in essence judicial—you will be required not only to do justice, but you will be required to be seen to do justice, and in that task, I feel that you will have the support of every section of this House.

श्री० बोलिन्द दास (जबलपुर) पः  
अध्यक्ष महोदय, मैं भी आप को बधाई देने के लिए बड़ा हुमा हूँ। मैं ने सन् 1923 से ही इस सदन को देखा है और समय समय पर इस के जो अध्यक्ष होते रहे हैं, उन को भी देखता रहा हूँ। 1924 में इस सदन पर सर फ्रेडरिक स्ट्राइट बैठे थे और थोड़े ही दिन के बाद हमने यहाँ श्री बिट्टल भाई पटेल का निर्वाचन किया था।

श्री बिट्टल भाई पटेल के खिलाफ उस समय श्री टी० रंगाचारी खड़े हुए थे और बिट्टल भाई जी को उन के केवल दो बोट अधिक मिले थे। उस के बाद भी मैं ने इस सदन के अनेक अध्यक्षों को देखा। श्री मावलंकर जी भी भी जीत स्वतंत्रता के पहले केवल दो बोटों से हुई थी। उन के खिलाफ खड़े थे श्री कबालत भी जहाँगीर उध के बाद यहाँ श्री अनन्त जयनम धायंगर साथे। उस के बाद सरदार हुकम सिंह जी

साथे और इन सबोंने कुछ परम्पराओं को स्थापित किया। मैं इस बात से बिलकुल सहमत हूँ कि पुरानी ही परम्परा सदा चलती रहे यह आवश्यक नहीं है। लेकिन अपना भविष्य हम वर्तमान के साथ ही भूत ने भी बनाते हैं इस से इनकार नहीं किया जा सकता है। इस देश की एक बड़ी पुरानी संस्कृति, एक बड़ी पुरानी सभ्यता रही है। हम ने यहाँ पर निष्ठा-वियों के, मंत्रिकों के, ब्रह्मियों के यह सब प्रजातंत्र देखे हैं। इतिहास में उन को एक विशेष स्थान है। दो ही देशों में उस समय प्रजातंत्र चलते थे। एक भारत में और एक यूनान में एथेन्स स्पार्टा आदि में। उन से हम आज भी कुछ परम्पराएं प्राप्त कर सकते हैं। हमारे देश की यह प्रजातंत्र की बहुत पुरानी परम्परा है, जिसकी आपकी रक्षा करनी है और उसी के साथ परिस्थितियों के अनुसार जो परिवर्तन हो गए हैं उन पर भी ध्यान देना है। जिस समय श्री मावलंकर जी इस सदन के अध्यक्ष चुने गए उस समय नियम थे कि यहाँ पर केवल अंग्रेजी में बोला जा सकता था। उन नियमों में बिना कोई परिवर्तन किये श्री मावलंकर जी ने सबसे पहले यहाँ हिन्दी भाषाओं की इजाजत दी और जब इस पर कुछ आपत्ति उठाई गई तो उन्होंने एक उत्तर दिया और बड़ा सुन्दर उत्तर दिया वह आपकी यहाँ कार्यवाही में देखने को मिलेगा उन्होंने कहा कि नियम बैसा रहते हुए भी यदि परिस्थितियाँ बदल गई हैं तो उन नियमों की अवहेलना करनी चाहिये और उन परिस्थितियों के अनुसार चलना चाहिए। श्री मावलंकर जी के समय यहाँ हिन्दी के भाषण प्रारम्भ हुए अभी भी प्रकाशवीर शास्त्री जी ने जो बात कही है वह ध्यान में रखने योग्य है। मनुष्य में और दूसरे प्राणियों में जो सब से बड़ा अन्तर है वह यह है कि निसर्ग ने मनुष्य को जो ज्ञान दक्षिण दी है वह अन्य किसी प्राण को नहीं दी उस ज्ञान शक्ति का मुख्य साधन भाषा होती है। मैंने दुनिया के प्रायः सभी देशों को देखा है, लेकिन किसी देश में भी मैंने किसी विदेशी भाषा का ऐसा प्रयोग, ऐसा प्रभुत्व, ऐसा महत्व नहीं देखा जैसा कि इस देश में अंग्रेजी



[ श्री गोविन्द दास ]

भाषा का है। हम किसी भी भारतीय भाषा के विरुद्ध नहीं हैं। जो लोग समझते हैं कि मैं हिन्दी का ही पक्षपाती हूँ वह मुझे गलत समझते हैं। हम हिन्दी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के भी पक्षपाती हैं और चाहते हैं कि हिन्दी के साथ समस्त भारतीय भाषाओं को भी अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाय। इस देश में प्रजातन्त्र तभी चल सकता है कि जब हम इस देश का समस्त कार्य केन्द्र का हिन्दी में करें और हर राज्य का उस की भाषा में करें।

आप कांग्रेस दल हैं, यह आप को आज से भूल जाना चाहिये। आज से आप को यह समझना चाहिये कि आप सब दलों के हैं और इस को भूल कर आप को कांग्रेस दल की और दूसरे दलों की सुरक्षा करनी चाहिए। उन सब सुरक्षाओं से ऊपर जो सुरक्षा है वह आप को स्वयं अपने से अपनी सुरक्षा करनी चाहिए। जब तक आप पूरी ईमानदारी के साथ, निष्पक्षता के साथ अपने काम को अंजाम नहीं देंगे तब तक इतिहास में आप अपनी सुरक्षा नहीं कर पायेंगे। इसलिये सब सुरक्षाओं से बढ़कर सर्वोपरि सुरक्षा आप की स्वयं की है। आप को अपनी अन्तरात्मा की तरफ ध्यान देकर सारे कार्य को चलाना है मुझे विश्वास है कि इस सदन में हल्का या जो कुछ गलत चीजें होती थी उन को आप नहीं होने देंगे और जो विरोधी पक्ष है वह भी इस बात का ध्यान रखेगा। इस तरह हम स्वच्छ और स्वस्थ परम्पराओं को स्थापित कर सकेंगे। मैं अंत में आप को फिर हृदय से बधाई देता हूँ।

Shri Tenneti Viswanatham (Visakhapatnam): Mr. Speaker, Sir, I should have been the first to be called today to congratulate you. Apparently you are bound by traditions, which the opposition wants you to break and you have not broken them so far. You should have called me first. We are old companions. I am happy I have lost to you rather than to someone else whom I do not know.

You are presiding now over the supreme legislature of 50 crores of people. This House rules over the destinies not only of these 50 crores of people, but it has got the force and strength within itself to mould the forces of peace in Asia. Therefore, the post you now occupy is really a coveted post and there was no reason why the Congress Party should not have coveted it for its own nominee, without a consensus of opinion, as the opposition leaders demanded.

On that side, to your right, you have got a party with majority and authority. Here on this side you have a party with no authority and with no majority. You are a person in whom great discretion is vested by rules. We only trust that your discretion will be exercised in our favour and not in their favour, for they have got authority; they have got a majority always at their beck and call and the whip which may be effective hereafter. Of course, it is true that during the last three parliaments, there was not much necessity for them to be quite responsive to the opposition. But I think in the fourth parliament, it will be otherwise and hereafter the Treasury Benches will be very careful to be alert and responsive as far as possible to the opinions expressed on this side; for, with authority and majority they have not much need to be in contact with the people from day to day. But on this side, we are every day in touch with the people; we know the pulse of the people better.

Some hon. Members: No, no.

Shri Tenneti Viswanatham: I am glad to be told that I am not correct. The proof of it lies in their conduct in the near future. Perhaps in two or three days' time, we shall have occasion to see whether they are in touch with the pulse of the people or not. Therefore, it is up to you now to protect our rights. In protecting us, you will protect the dignity of the entire House, (Interruptions). It is often



said that the opposition has no patience. But now I find the majority party has no patience!

To be indulgent to a minority party in the opposition is the real sign of democratic spirit. I suppose it would not be contradictory. If you contradict it, you will be contradicting it not for the right cause. The measure of indulgence shown to the opposition is the measure in which you nourish democracy.

The fourth parliament has got a great responsibility. The conditions in the country are such that any wrong step taken by this House or by the Government will land us in greater troubles than we are facing today. It is up to you with all your experience to guide both sides of the House, particularly the opposition party because the Government have always got that facility to adopt certain attitudes based upon their majority to prejudice our rights and not upon realistic considerations.

Sir, I congratulate you once again. It is said that some people are born with a silver spoon in their mouths. But you were born with office!

Most of my friends may not know why I have said it. Excuse me for giving a little personal reminiscence. When Mr. Prakasam and Mr. Sambamurthi came to you to take you into the Congress you were but a child compared to those gentlemen. And when they brought you, they did not bring you into the Congress as a mere member; they brought you as an office-bearer. And when you came into the legislature, you were not content with being a member. You became a Minister, and thereafter it was an uninterrupted flow. But as you yourself have said sometimes, any single office which you hold is always for two years; you struck to that proposition so far. But hereafter I ask you not to stick to it.

Mr. Speaker, Sir, on my behalf and on behalf of my praja party which returned me, which has no other re-

presentative here but which has got millions of representatives in Andhra Pradesh, I congratulate you once again. I extend to you my co-operation fully and in the fullest measure I might couple with it the request that in all discretionary matters your discretion must be on our side.

Mr. Speaker: Hon. Members, I am—

श्री अमृतल शर्मा (गङ्गाव) : मैं एक आवाद मेम्बर हूँ, मुझे भी बोलने दिा जाये।

Mr. Speaker: If you begin now, there will be too many people rising, and there will be no end to it. A number of them want to speak.

श्री अमृतल शर्मा : मुझे भी बोलने का हक होना चाहिये।

Mr. Speaker: Once I allow you, and if a large number of Members get up, it will be difficult to deny them the privilege. So I request you kindly to excuse me just today. I am deeply grateful to the hon. Members for having conferred upon me the distinction of presiding over the deliberations of this House. I am also grateful for the good words said about me by the Leader of the House and leaders of other opposition parties and other friends. When I think of the responsibilities attached to this high office and the nature of duties involved, I feel a little nervous and diffident as to whether I shall be able to carry this burden effectively. But, with my faith in the democratic ideals and the spirit of co-operation that I hope to get from all of you, I am confident that my task will not be difficult.

The country has recently witnessed one of the largest elections ever held in the history of the democratic world, involving some 250 million people. It is a matter of deep satisfaction that these elections have been conducted peacefully and have

[Mr. Speaker]

been free and fair. They have made possible sweeping changes in the body politic of the country without, in any way, impairing the national unity or endangering the structure of the State. The changed post-election scene should prompt us all to undertake a basic revision of our old attitudes and outmoded habits of mind. It is for all sections of this House to feel a greater sense of responsibility with a greater degree of self-confidence in our approach to the day-to-day problems that come up before the House.

With the increased political maturity of our people as reflected in the recent elections, more and more people will be closely watching our performance in the House and the thought-content of our deliberations. As such we shall have to be increasingly alive to the needs and aspirations of the common man.

Our country has always been known for her tolerant attitude towards differing ideas, views and opinions. This great national quality should be adequately reflected in our discussions and deliberations in this august body, composed as it is of eminent representatives, from different parts of the land, representing different shades of opinion.

I need not emphasise that discipline is a *prima pre-requisite* for smooth and efficient functioning of Parliament. Parliament is the national forum and our conduct in this House may have a deep impact upon the country as a whole. It lies in us to raise the prestige and stature of the House and promote faith in parliamentary institutions.

Sitting in this exalted Chair, which has been occupied in the past by my illustrious predecessors like Shri Vithalbhai Patel, Shri G. V. Mavalankar, Shri M. A. Ayyangar and until recently by Sardar Hukam Singh, I feel a little too small when compared to them their ability and the manner in which they conducted them-

selves. They have been great Speakers and the traditions established by them have laid sound foundations for the functioning of parliamentary democracy in our country. It should be the duty and the special responsibility of this House to keep that continuity and to respect these traditions. The Speaker has a special obligation to protect the rights of all sections of the House especially of the minorities—groups or parties—in the House. I, on my part, shall ever keep that responsibility before me. Adherence to certain basic principles by the Speaker alone will, however, not produce the desired result. A corresponding obligation devolves on those who are in power as well as on those in Opposition, to respect the Chair and to abide by its rulings unreservedly. It is only in such a spirit of give and take and mutual respect and co-operation that enduring foundations of an effective parliamentary forum can be established.

My office requires of me to be impartial and judicious in the conduct of my work. I can assure you with all the force at my command that I will try to live up to this requirement and maintain the high traditions set by my predecessors. As a necessary corollary to this resolve, I resign my membership of the party to which I had the honour to belong for 34 years. So long as I occupy this Chair, it shall be my endeavour to see that all sections of this House get an honest impression that I do not belong to any party at all.

All I can promise you today is that I shall always endeavour, to the best of my capacity, to regulate my conduct in this Chair on the lines which would not only be in the national interest and in the interest of all sections of this august House but will also further the cause of the democratic institutions which we have adopted for the governance of our country.

Most of you have known me heretofore in a different capacity, and I

have also known many of you and, therefore, I feel re-assured that the necessary degree of co-operation will be forthcoming from every Member of the House irrespective of party affiliations. After all, we have a common aim and interest—to uphold the dignity of this House and to promote the welfare of our people. But one thing I would like to tell you and it is this: if on any occasion anything that I say or do in the discharge of my duties gives offence to any Member, party or group, I would request you not to harbour any ill-feelings against me, not to let misunderstandings grow, but to come to me personally and talk the matter over so that we can move further in perfect harmony.

I thank you once again for the great honour bestowed on me, the greatest that is within the power of this House to confer under the Constitution, and I assure you of my complete devotion to the service of this House.

Jai Hind.

The House now stands adjourned to meet again half an hour after the conclusion of the President's Address tomorrow, the 18th March, 1967.

13.30 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till half-an-hour after the conclusion of the President's Address on Saturday, March 18, 1967/Phalguna 27, 1888. (Saka).